मूल्य दो रुपये (२००)
प्रथम संस्करण दिसम्बर, १९५७
प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक • हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-ग्रान्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बडी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवत. उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिजावेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियो मे काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्राय समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनो कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य मे अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय हो गये, और यह कवि-कुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है। शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम), वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड (मच एडू अबाउट नथिंग), जैसा तुम चाहो (एज यू लाइक इट), तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओ को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटको का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम) शेक्सपियर का एक अत्यत प्रसिद्ध गीतात्मक सुखात नाटक है। यह उसके रचनाकाल मे पहले निर्माणयुग के अतर्गत आता है। इसी युग मे उसने 'लव्स लेबर्स लॉस्ट', 'टू जेन्टलमैन आफ वेरोना', 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' इत्यादि नाटक लिखे थे। 'रोमियो एण्ड जूलियट' उसका प्रसिद्ध दु खात नाटक भी इसी काल मे आता है।

इसका कथानक वन देवता, परियो इत्यादि को ले कर चलता है। इसमे प्राचीन ग्रीस के पात्र हैं, तथा निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले अभिनेता है, जिनमे बौटम है, जो शेक्सपियर का एक प्रसिद्ध पात्र है।

इस नाटक मे प्रकृति का बडा ही सुदर चित्रण हुआ है। झरने, फूल, छाया और ज्योत्स्ना का मनोहर वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसका मुख्य विवेच्य प्रेम है और प्रेम भी बडी चुभन वाला, किंतु वह अवसाद को नही, सुख की प्राप्ति को प्रस्तुत करता है। ऐसा लगता है जैसे कोई कल-कल निनाद करता हुआ झरना वह रहा हो।

यद्यपि शेक्सपियर के आलोचक उसके 'बारहवी रात' नामक सुखात नाटक को अधिक परिपक्व मानते है, परतु मुझे यही अच्छा लगता है, क्योकि इसमे शेक्सपियर अधमकाव्यत्व की ओर नही प्रेरित हुआ, शब्दो का जाल यहाँ नही के बराबर है। हास्य तो इसमे इतना सशक्त है कि शेक्सपियर की मेधा को देख कर हृदय आप्लावित हो जाता है। यहाँ 'पक' अलौकिक होते हुए भी एरियल की भाँति दिव्यत्व को

प्राप्त नही करता, ग्रत वह हमे गुदगुदाता रहता है।

मनुष्य के प्रेम, उसके लौकिक व्यवहार की मूर्खता को कवि ने ऐसा उभार कर रखा है कि पढते-पढ़ते तबियत लोट-पोट हो जाती है और जब बौटम गधे का सिर लिये टिटानिया के प्रेम का पात्र बनता है, तब तो देखने योग्य दृश्य बन जाता है। शेक्सपियर के युग मे दृश्य नही होता था, उसकी कल्पना की जाती थी। किंतु यदि ग्रब भी इस नाटक को खेला जाय तो ग्रधिक वाह्य उपकरणो की ग्रावश्यकता नही पडेगी ग्रौर नाटक वहुत रोचक बन सकेगा। ग्रपने से पूर्वकाल के नाटक पर शेक्सपियर ने वडा ही मीठा व्यग कसा है। ग्रमर ग्रौर मर्त्यों का यह सयोग यहाँ ऐसा सहज ग्रा बैठा है कि हमे ग्रस्वाभाविक भी ग्रस्वाभाविक-सा नही लगता, क्योकि घटना का ग्राकर्पण हमे जड यथार्थ से ऊपर उठा कर उधर ले जाता है, जिधर लेखक ने ग्रानद की सृप्टि की है। इसमे हम दैवी ग्रौर पार्थिव व्यापकत्व का एक-सा सम्मिश्रण प्राप्त करते है ग्रौर प्रेम सबमे हमे समान दिखाई देता है। ड्रायडन ने शेक्सपियर के इसी ग्रलौकिक की सहजता की प्रशसा की है।

ग्रनुवाद करते समय ग्रनुभव किया कि ग्रपने ग्रन्य ग्रनुवादो की भाँति यदि मै इसका भी गद्यानुवाद कर दूँ तो शेक्सपियर का उचित प्रतिनिधित्व नही हो सकेगा। इसीलिये शेक्सपियर ने जहाँ गद्य का प्रयोग किया है, वहाँ मैंने गद्य मे ग्रनुवाद किया है ग्रौर जहाँ उसने पद्य का ग्रश्रय लिया है, वहाँ मैंने भी पद्य को ही स्थान दिया है। मेरे मित्रो की राय यह है कि यह ग्रनुवाद शेक्सपियर के लालित्य ग्रौर प्रसाद को भी उतार ला सकने मे समर्थ हुग्रा है, वाकी स्वय पाठक इसका

अतिम निर्णय दे सकेगे। पद्यानुवाद-भाग को कथोपकथन की दृष्टि से रखा गया है। पद्य होते हुए भी उसे गद्य के रूप मे वैसे ही बोला जा सकता है, जैसे शेक्सपियर का पद्य। कही-कही किसी पुरानी कथा का सदर्भ ऐसा आ गया है, जो हिंदी की गति मे दुरूहता उपस्थित करने वाला प्रमाणित हुआ। मैने उसे थोडा बदल दिया है, भावात्मक अनुवाद का आश्रय लेकर। और नीचे फुटनोट मे मूल का उल्लेख कर दिया है।

कुछ लोगो का मत है कि शेक्सपियर ने यहाँ निम्नवर्ग का मजाक उडाया है, तभी बढई, लुहार, बुनकर, ठठेरा इत्यादि को उपहासास्पद चित्रित किया है। वस्तुतः ऐसा नही है। कवि ने नाटक के पुराने अभावो की ओर ध्यान आकर्षित किया है और अपने नाटक सबधी उद्‌गारो को थीसियस के मुख से कहलवाया भी है, जिनका बहुत बडा महत्त्व है। जीवन की मूल विवेचना का जहाँ तक प्रश्न है, शेक्सपियर इस रचना मे भी पीछे नही रहा है, यही कारण है कि प्रायः उसकी अधिकाश रचनाओ मे विशेषता उसकी अपनी ही बनी रहती-सी मिल जाती है।

मनुष्य के पार्थिव का जो महत्त्व कवि ने उसके सारे हल्के-पन के साथ यहाँ प्रस्तुत किया है, ऐसा अन्यत्र मिलना काफी कठिन है। रोमान्टिक कवियो मे जो कल्पना का आनद आगे हमे अगरेजी साहित्य मे बढता हुआ मिलता है, शेक्सपियर मे हमे उसका एक अन्य ही रूप दिखाई दे जाता है।

—रागेय राघव

पात्र-परिचय

थीसियस	एथेन्स का ड्यूक
एजियस	हर्मिया का पिता
लाइसैन्डर डेमेट्रियस	हर्मिया के प्रेमी
फाइलोस्ट्रेट	थीसियस के आनदोत्सव का प्रबधक
क्विन्स	एक बढई
स्नग	लुहार
बौटम	एक बुनकर
फ्लूट	धौकनी बनाने वाला
स्नाउट	ठठेरा
स्टारवेलिंग	एक दर्जी
हिप्पोलिटा	एमेज़ौन लोगो की रानी, थीसियस से टसका विवाह होने वाला है
हर्मिया	एजियम की पुत्री, लाइसैन्डर से प्रेम करती है
हेलेना	डेमेट्रियम से प्रेम करती है
ओबेरोन	परियो का राजा
टिटानिया	परियो की रानी
पक	
पीजब्लौसम (मटर का फूल)[1] कौबवेब (जाला) मौथ (पतगा) मस्टर्डसीड (सरसो का बीज)	परियाँ

अन्य सेवक तथा परियाँ आदि

---

१ इन शब्दों का भावार्थ। पाठक को कल्पना का रूप देखना चाहिये।

पहला अंक

दृश्य १

[एथेन्स, थीसियस का प्रासाद]

[थीसियस, हिप्पोलिटा, फाइलोस्ट्रेट तथा सेवको का प्रवेश]

थीसियस आह सुदरी हिप्पोलिटा ! आ रहा देखो
वह क्षण धीरे धीरे कितना पास हमारे
जब हम तुम मिल जायेगे, फिर एक बनेगे !
करवट बदलें चार दिवस बस यही प्रतीक्षा,
चौथे दिन का चद्र नया जीवन लायेगा,
मिटती है यह क्षीण क्षीणतर होती होती
मद्य चद्रिका, तरुण विकल प्रेमी के मन को
छीज छीज कर काट रही सी जैसे कोई
विधवा अपना हृदय शीतले भाव रहित हो !

हिप्पोलिटा चार दिवस तो अधियाली रातो के गहरे
गह्वर मे जा
खो जायेगे, और चार राते सुपनो में
बहला देगी काल व्याप्ति को ।
और चद्रमा नया, गगन मे बन चाँदी का
झुका हुआ धनु, होगा उदित हमारे आनदो का
बनने सुदर साक्षी

थीसियस जाओ ! फाइलोस्ट्रेट ! जगा दो,
तुम एथेन्स नगर के सारे तरुण जनो को

होने दो आनद और मगल के उत्सव !
सुख विलास की कोमल चेतनता को जा कर
　　　　　　　　　　　आज जगा दो !
अरे मरण के नील अक मे खो जाने दो
जो विषाद की पीड़ा मे व्याकुल रहते हैं।
अपने इस आमोद मुखर मे शिथिल प्राण का सग
　　　　　　　　　　　　　　न होगा।

[फाइलोस्ट्रैट का प्रस्थान]

[एजियस, हर्मिया, लाइसैन्डर और डेमेट्रियस का प्रवेश]

एजियस　· जय ! थीसियस तुम्हारी जय हो, अहे
　　　　　　　　यशस्वी ड्यूक हमारे !

थीसियस　स्वागत, धन्यवाद हे सज्जन, श्रेष्ठ एजियस,
क्या सवाद सुघर लाये हो तुम हित मेरे ?

एजियस　आह ! विकल विक्षुब्ध हृदय हो मै आया हूँ ।
मेरी पुत्री, मेरी ही बालिका हर्मिया, लक्ष्य बनी है
मेरे इस अगारक क्रोधानल का सचमुच,
डेमेट्रियस ! इधर आओ तुम !
हे कुलीन शासक मेरे ! यह सुने एक क्षण !
यह ही है वह व्यक्ति चाहता हूँ मै जिससे
　　　　　　　परिणय कर ले मेरी पुत्री !
लाइसैन्डर ! तुम इधर खडे हो !
हे दयालु शासक प्रवीर ! यह विनय सुने अब,
यही व्यक्ति है जिसने मेरी कोमल दुहिता
पर फैलाया अपना भीषण इद्रजाल है
ओ लाइसैन्डर ! तूने, तूने

गीत सुनाये इस चपला को और प्रेम के
उपहारो को इससे पाया, इसको तूने बहुत
भेट दी है बहला कर।
और चाँदनी रातो मे तूने ही इसके शयन कक्ष के
वातायन के नीचे आकर गीत सुनाये करुण कंठ से,
प्रेम, सुवकती तृष्णा वन कर वह-वह जिनसे
भिगो गया मन।
अपने केशपाश की घुंघराली छवियो से,
छल, चतुराई, मुद्रा, दूतो और मिठाई
आदि अनेको चालो का करके प्रयोग ही
तूने इसके अपरिपक्व यौवन में इसके चपल हृदय को
जीत लिया है !
तेरी छलमय दृढता इसके इस अनजाने चपल मनस को
हिला गई है।
तूने ये षडयंत्र गहन कैसा फैलाया !
मेरी पुत्री मुझसे ही विद्रोह कर रही ?
मैंने उसे विनीत वनाया था पर तूने
उसकी वाणी मे यह ऐसे शूल भर दिये !
हे कुलीन शासक यह देखे !
यदि यह कन्या करती है स्वीकार नही अब
डेमेट्रियस वीर से अपना परिणय करना,
यहाँ सामने हे दयालु प्रभु ! स्वय आपके,
तो एथेन्स का वही पुरातन न्याय माँगता हूँ मै इस क्षण,
यह मेरी है, मै इसका कुछ भी कर सकता।
या तो यह स्वीकार करे यह तरुण, जिसे मैंने स्वीकारा,

या फिर मुख मे जाये निश्चय आज मृत्यु के,
अपना जो हो नियम न्याय बस वही चाहता हूँ लागू हो,
हे दयालु शासक केवल मेरी है यह ही विनय एक बस ।

थीसियस कहो हर्मिया ! कुछ कहना है ? सुघर बालिके !
समझो यदि कोई समझाये ।
अरे पिता है स्वय देवता हेतु तुम्हारे ।
वह ही है निर्माता, सर्जक सकल रूप का
औ' आकृति का किंतु तुम्हारी !
उसके लिये मोम की पुतली हो तुम देखो,
वह चाहे तो भले मिटा दे तुम्हे, बना दे ।
डेमेट्रियस ! योग्य वर है यह ! यह तो देखो !

हर्मिया ऐसा ही तो लाइसैन्डर है !

थीसियस वह अपने मे भले योग्य है,
किन्तु यहाँ तो प्रश्न तुम्हारे पूज्य पिता की
स्वीकृति का है, इसलिये यह युवक दूसरा
अधिक योग्य है ।

हर्मिया आह चाहती हूँ मै कितना,
मेरे पिता देखते यदि मेरी आँखो से ।

थीसियस अधिक उचित हो यदि वह नयन तुम्हारे देखे
पूज्यपिता के दृष्टिकोण से ।

हर्मिया हे श्रीमान् दयालु ! क्षमा कर देंगे मुझको,
यही प्रार्थना करती हूँ मै ।
नहीं जानती किस अद्भुत साहसी शक्ति ने
मुझको ऐसा मुखर कर दिया !

नही जानती, मेरा वह सकोच सुलभ नारी का भी
किस ओर क्या हुआ !
जो मै यहाँ उपस्थिति मे ऐसी प्रगल्भ हो व्यक्त कर रही
भाव हृदय के !
पर दयालु ! विनती करती हूँ, एक चाह है मेरे भीतर,
यह वतलायें, यदि मै डेमेट्रियस न चुन कर,
करूँ विवाह न उससे तो क्या
आयेगी विपत्तियाँ मुझ पर !

थीसियस
नियम यही है—या तो तुमको जाना होगा
मृत्यु दण्ड मे, या मानव समाज से विल्कुल
परित्यक्त हो दूर पडेगा रहना अपना वाकी जीवन।
मुघर हर्मिया ! इसीलिये अपनी तृष्णा से
कर लो तर्क वितर्क सोच कर।
अपने यौवन से तो पूछो, अपनी चपल वासना के
उच्छृ खल आवेशो को परखो,
यदि तुम अपने पूज्य पिता की आज्ञा का पालन न
कर सकी,
तो क्या साध्वी का कठोर जीवन सह लोगी ?
ब्रह्मचारिणी का एकात न खा डालेगा तुमको वोलो ?
वह अनत सूनापन उस नीरव जीवन का,
जिसमे नही ताप मिलता कोई रजन का ?
हीन वासना हीन चद्रमा —
उसे देखकर कव पक पीडित मत्र निभृत मे
वोल सकोगी ?
उस सयम की मर्यादा का पालन करने वालो को

या फिर मुख मे जाये निश्चय आज मृत्यु के,
अपना जो हो नियम न्याय बस वही चाहता हूँ लागू हो,
हे दयालु शासक केवल मेरी है यह ही विनय एक बस ।

थीसियस कहो हर्मिया ! कुछ कहना है ? सुघर बालिके !
समझो यदि कोई समझाये ।
अरे पिता है स्वय देवता हेतु तुम्हारे ।
वह ही है निर्माता, सर्जक सकल रूप का
औ' आकृति का किंतु तुम्हारी !
उसके लिये मोम की पुतली हो तुम देखो,
वह चाहे तो भले मिटा दे तुम्हे, बना दे ।
डेमेट्रियस ! योग्य वर है यह ! यह तो देखो !

हर्मिया ऐसा ही तो लाइसैन्डर है !

थीसियस वह अपने मे भले योग्य है,
किन्तु यहाँ तो प्रश्न तुम्हारे पूज्य पिता की
स्वीकृति का है, इसलिये यह युवक दूसरा
अधिक योग्य है ।

हर्मिया आह चाहती हूँ मै कितना,
मेरे पिता देखते यदि मेरी आँखो से ।

थीसियस अधिक उचित हो यदि वह नयन तुम्हारे देखे
पूज्यपिता के दृष्टिकोण से ।

हर्मिया हे श्रीमान् दयालु ! क्षमा कर देगे मुझको,
यही प्रार्थना करती हूँ मै ।
नही जानती किस अभूत साहसी शक्ति ने
मुझको ऐसा मुखर कर दिया !

नही जानती, मेरा वह सकोच सुलभ नारी का भी
किस ओर क्या हुआ !
जो मै यहाँ उपस्थिति मे ऐसी प्रगल्भ हो व्यक्त कर रही
भाव हृदय के !
पर दयालु ! विनती करती हूँ, एक चाह है मेरे भीतर,
यह बतलाये, यदि मै डेमेट्रियस न चुन कर,
करूँ विवाह न उससे तो क्या
आयेगी विपत्तियाँ मुझ पर !

थीसियस नियम यही है—या तो तुमको जाना होगा
मृत्यु दप्ट्र मे, या मानव समाज से बिल्कुल
परित्यक्त हो दूर पडेगा रहना अपना बाकी जीवन।
सुघर हर्मिया ! इसीलिये अपनी तृष्णा से
कर लो तर्क वितर्क सोच कर।
अपने यौवन से तो पूछो, अपनी चपल वासना के
उच्छृ खल आवेशो को परखो,
यदि तुम अपने पूज्य पिता की आज्ञा का पालन न
कर सकी,
तो क्या साध्वी का कठोर जीवन सह लोगी ?
ब्रह्मचारिणी का एकात न खा डालेगा तुमको बोलो ?
वह अनत सूनापन उस नीरव जीवन का,
जिसमे नही ताप मिलता कोई रजन का ?
हीन वासना हीन चद्रमा —
उसे देखकर कब पक पीडित मत्र निभृत मे
बोल सकोगी ?
उस सयम की मर्यादा का पालन करने वालो को

मत समझो तुम कोई साधारण,
क्या कौमार्य्य तुम्हारा ऐसी
तीर्थयात्रा की कठोरता झेल सकेगा ?
वह गुलाब का फूल खिला रहता काँटो पर,
है अनत एकात अकेला उसका साथी,
वही फूलता, वही रूप की ज्योति जगाता
और वही मुरझाकर होता लीन काल के महाशून्य मे।
श्रेयस्कर है, किंतु प्रेय वह नही जगत मे।
धरती का सुख है इसके स्पर्शों मे चचल !

हर्मिया हे प्रभु ! मै कौमार्य्य विना दूँगी यह अपना
उसी निभृत के तप्त कुसुम सी,
किंतु भार यह अस्वीकृत है मुझे आपका,
यह स्वामित्व मुझे क्षण भर स्वीकार नही है।

थीसियस क्षण भर सोचो और शब्द दो तव विचार को।
अभी समय है। नये चद्र के आने तक लो—
जव मै और प्रिया मेरी दोनो ही मिल कर
एक पाश मे लय होवेगे,
उल्लघन कर आज्ञा अपने पूज्य पिता की
उस दिन या तो मृत्यु-विवर मे जाने को तैयार रहो तुम,
या इस डेमेट्रियस सुघर से परिणय कर लो !
या वेदी पर सुमुखि डायना देवी की यह करो प्रतिज्ञा
तपस्पूर्ण जीवन कठोर एकात वरोगी।

डेमेट्रियस आह हर्मिया ! रुको, अहे लाइसैन्डर अव तो
हठ को त्यागो !
यह मेरा अधिकार एक है, इसके सन्मुख

मत रखो अपने मन की यह चपल चाहना !

लाइसैन्डर डेमेट्रियस ! तुम्हे तो उसके पूज्य पिता का
प्रेम मिला है।
मुझे हर्मिया का मिल पाया मधुर प्रेम है।
पूज्य पिता से ही विवाह कर लो तुम अपना।

एजियस ओ जघन्य लाइसैन्डर! इसने मेरी
प्रेमराशि पाई है, औ' है जो कुछ मेरा
मेरा प्रेम उसे उस सब को निश्चय देगा।
यह मेरी है, इस पर मेरा जो अधिकार प्राप्त है मुझको
वह मै डेमेट्रियस सुजन को निश्चय दूंगा।

लाइसैन्डर हे श्रीमान् ! जहाँ तक कुल का प्रश्न खडा है,
मै भी तो कुलीन हूँ इसकी भाँति, शुद्ध हूँ !
मेरा वैभव भी है इसकी भाँति यशस्वी।
इन गर्वीले कथनो से ऊपर है मेरे सुखद भाग की
उज्ज्वल गरिमा,
मै सुदरी हर्मिया का हूँ प्रेमपात्र, ससार जान ले !
क्यो अपना अधिकार न माँगू फिर यह बोलो ?
डेमेट्रियस ! शपथ है सच तुम झूठ न कहना !
क्या तुम ही वह व्यक्ति नही हो जिसने बोलो
हेलेना, दुहिता नेडर की, परम सुदरी,
पहले वहलाई थी अपनी प्रीति प्रगट कर ?
क्या तुमने ही उसका हृदय नही जीता था ?
वह सुदरी विचारी कितना तुममे करती प्रेम, प्रेम मे
तुम्हे स्वय देवता समझती,

किसे ! तुम्हे ! ! तुम जो अस्थिर, चचल मानव हो !
रस के लोभी !

थीसियस करता हूँ स्वीकार कि अवगत हूँ मैं इससे,
सोचा था कि करूँगा इस पर बात कभी मैं
डेमेट्रियस सुजन से निश्चय।
किन्तु कार्य्य के भीम भार से लदा हुआ मैं
भूल गया था।
डेमेट्रियस सुनो, आओ तुम सग एजियस !
मेरे सग चलो तुम दोनो ! तुमसे मुझको करनी है
एकात बात कुछ।
सुघर हर्मिया ! पूज्य पिता की आज्ञा का पालन
करने की
चिंता करना ध्येय तुम्हारा बने अभी से।
और नही तो नियम देख लो वही पुरातन
इस एथेन्स नगर का सुन लो !
मृत्यु या कि एकातवास बस दो ही पथ है !
हिप्पोलिटा प्रिये आओ ! अब चले यहाँ से,
प्रेयसि मेरी ! डेमेट्रियस, एजियस आओ !
मुझे तुम्हे कुछ आवश्यक है कार्य्य बताना
इस विवाह का, और तुम्हारे ही बारे मे
कुछ बाते भी तो करनी है।

एजियस श्रद्धा औ' इच्छा से हम तत्पर है स्वामी।

[लाइसैन्डर और हर्मिया के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

लाइसैन्डर प्रेयसि ! यह क्या ? क्यो कपोल हो गये तुम्हारे
ऐसे पीले ?

कैसे यह गुलाब मुरझाये जाते है इतनी तेजी से ?

हर्मिया — मेरे नयनो के तूफानो की वर्षा की इन्हे चाह है,
उससे सिंचन पाकर यह फिर जाग्रत होगे !

लाइसैन्डर — आह ! बताता है इतिहास मुझे यह अब तक
सच्चा प्रेम कभी भी पथ न सहज पा सका ।
या तो कुल का भेद बीच मे वध बन गया—

हर्मिया — ऊँच नीच का था व्यवधान कठोर बीच मे !

लाइसैन्डर — या फिर भेद आयु का आया,!

हर्मिया — प्रेयसि-प्रियतम मे कितना छल यो समा गया !

लाइसैन्डर — या फिर कोई अन्य मित्र ही चुनता सगी

हर्मिया — ओ धिक्कार कि वर या वधू चुने आकर यो
किसी और की आँख ! भला क्या होगा उसमें ?

लाइसैन्डर — यदि दोनो ही ओर प्रेम सवेदन पाकर
योग्य पात्र मे हुआ, उस समय
युद्ध, मृत्यु या रोग डाल देते है घेरा
आकर उस पर,
ध्वनि सा उसे क्षणिक कर देते,
छाया सा चल, अरे स्वप्न सा लघु कर देते !
जैसे स्याह रात मे बिजली पलक झपकते
गगन भूमि को चकाचौध मे दर्शित करती—
इससे पूर्व कि मनुज पुकारे 'सावधान हो',
निमिष मात्र मे अधकार के भीषण जबडे
उसे निगलते,
उज्ज्वल वस्तु विलय को पाती यो क्षण भर में ।

हर्मिया तब तो सच्ची प्रीति सदा बधन पाती है
यही भाग्य का यदि निर्णय है,
आओ तब तो हम सकट मे धैर्य्य वरेगे।
यह तो नियम सदृश है बधन।
ज्यो कि प्रेम मे दीन कल्पना के अनुयायी
स्वप्न, चाहना, अश्रु, आह, उच्छ्वास, भावना
प्रेम-नियम है।

लाइसैन्डर आह! हृदय कैसे समझाया!
सुनो हर्मिया! विधवा चाची है मेरी अति धनी एक, जो
है एथेन्स से दूर सात योजन औ' मुझको
अपना पुत्र समझती, वह जो पुत्रहीन है।
प्रिये हर्मिया! वहाँ करेगे हम विवाह चल,
इस एथेन्स के तीक्ष्ण नियम यह, वहाँ नही सच,
पीछा अपना कर पायेगे। यदि है तुमको
मुझसे सचमुच प्रेम हर्मिया! तो कल निशि में
निकल चलो तुम घर से अपने पूज्य पिता के,
और नगर से योजन भर की दूरी पर ही
वन मे जहाँ हेलेना के सग मिला कभी था
तुमसे एकबार मै पहले, ग्रीष्म प्रात की
पूजा की थी मैने जिस दिन,
वही तुम्हारी प्रिये! प्रतीक्षा आह करूँगा!

हर्मिया हे मेरे प्रियतम लाइसैन्डर!
शपथ काम के धनु प्रचण्ड की,
उसके शर-सुवर्ण मुख की सौगध मुझे है,
वीनस देवी के विहगो की सहज सरलता

की है मुझको शपथ, कि जिसके
वल पर दृढ हो प्रेम समृद्ध हुआ करता है,
जवकि दिखा था झूठा ट्रायन चढा पोत पर
उसी अग्नि की शपथ कि जिसने धधक जला दी
कारथेज की रानी, सचमुच
उन शपथो की शपथ जिन्हे पुरुषो ने तोडा,
जिनकी सख्या कही अधिक नारी-वचनो से,
वही मुझे तुमने है प्रियतम पुन वुलाया !
कल आऊँगी तुमसे मिलने मै नि सशय !

लाइसैन्डर पूरा करना वचन प्राण ! लो देखो तो वह
हेलेना आ रही इधर है।

[हेलेना का प्रवेश]

हर्मिया हेलेना तुम किधर चल पडी ? करे भला
भगवान तुम्हारा अहे सुदरी !

हेलेना मुझे सुदरी कहती हो तुम ? मत कहना फिर,
अहे सुदरी ! तुम हो सुदरि,
डेमेट्रियस प्यार करता है तुमको।
रूप तुम्हारे नयनो से वरसा करता है,
कोकिल से भी मीठे मनहर वैन तुम्हारे
जो वसत के फुल्लकुसुम मकरदो मे रह
कूका करता।
आह वेदने ! होता मेरा भाग्य कही सच
तुम जैसा ही सुघर हर्मिया !
पानी यदि मै भर आँखो मे रूप तुम्हारे इन नयनो का,
यह स्वर कोमल मुझमे यदि रम पाते तो प्रिय !

डेमेट्रियस प्राप्त यदि हो जाये फिर मुझको
मैं प्रतिछाया बनने को प्रस्तुत हूँ देखो
सुघर तुम्हारी प्रिये हर्मिया !
मुझे सिखादो वह सम्मोहन, जिसके द्वारा
डेमेट्रियस-हृदय को तुम हो जीता करती,

हर्मिया उसे देखती तिरस्कार से सदा किन्तु मैं
फिर भी प्यार मुझे करता है,

हेलेना आह तुम्हारा तिरस्कार यदि सिखा सके यह
कौशल मेरी मुस्कानो को !

हर्मिया मै तो उसको सदा शाप देती रहती हूँ,
फिर भी वह तो प्यार प्यार देता है मुझको।

हेलेना यदि मेरी प्रार्थना प्रणय को तनिक जगाती !

हर्मिया जितनी करती हूँ मै उससे घृणा तीक्ष्णतर
उतना ही वह मेरे पीछे डोला करता।

हेलेना जितना अधिक प्यार करती हूँ उसको प्रिय मै
उतना ही वह मुझे घृणा करता है आली।

हर्मिया हेलेना ! मूर्खता किंतु उसकी यह सारी
मेरा तो अपराध नही है कोई निश्चय।

हेलेना नही, तुम्हारा नही, तुम्हारे सलज रूप का ही है आली,
होता यदि मौजूद कही मुझमे ही हे सखि
यह सुदर अपराध तुम्हारा !

हर्मिया धीरज धरो ! अब न देख पायेगा वह मुख
मेरा सुन लो !
लाइसैन्डर औ' मै अब निश्चय, कर जायेगे
इस बधन की दीन जगह से दूर पलायन।

लाइसैन्डर के मिलने से पहले तो मुझको
यह एथेन्स स्वर्ग लगता था,
आह प्रेम मे जाने कैसी है विचित्रता
अव वह स्वर्ग नरक लगता है ।

लाइसैन्डर हेलेना ! रहस्य तुमसे न रखेंगे,
कल जव चद्र-देवि देखेगी
चाँदी सा प्रतिविम्व सुघर प्रिय
पानी के दर्पण मे अपना मुखर रजनि में,
दूवो पर विखरायेगी मोती सिंगार के चपल पनीले,
समय-मीत जव प्रेयसि-प्रिय के मुग्ध पलायन
को है देता छिपा स्नेह से,
हम एथेन्स के सिंहद्वार से निकल जायेंगे !
यही योजना की है निश्चित ।

हर्मिया उस वन मे ही, जहाँ गुलावो की शैय्या रच
वहुधा हम तुम अलसाई सोया करती थी ।
अपने मन के मीठे-मीठे भेद परस्पर
खोला करती थी मुस्काती ।
वही मिलूंगी मैं अपने प्रिय लाइसैन्डर से ।
नयन फिरा लेंगे एथेन्स से सखी वही से !
नये मित्र, नूतन समाज ढूंढने विश्व मे
कही चल पडेगे हम नूतन पथ ग्रहण कर ।
विदा ! सखी ! कितने खेलो की प्यारी साथिन !
करो हमारे लिये प्रार्थना परमात्मा से !
हो सौभाग्य पूर्ण तेरा भी, मिले तुझे वह
तेरा प्रियतम, डेमेट्रियस प्यार दे तुझको !

गहरी आधी रात नलक कल हे लाइसैंन्डर।
नयन तृपित ही रहे हमारे, प्रेम-अमृत से दूर,
क्योकि कल दर्शन होगे।

वचन निभाना।

लाइसैंन्डर क्यो सदेह भला करती हो। निश्चय जानो।

[हर्मिया का प्रस्थान]

विदा, हेलेना।
जैसे तुम हो उसे चाहती,
वैसा ही वह करे प्यार तुमसे डेमेट्रियस।

[प्रस्थान]

हेलेना किसका किसको हर्ष प्राप्त होता है जग मे
कौन जानता।
मै ऐथेन्स मे इस जैसी ही मानी जाती सुघर सुन्दरी।
पर इससे क्या। डेमेट्रियस सोचता ऐसा भला कहाँ है?
वह क्या जानेगा जो सबको ज्ञात हृदय मे,
उसे हर्मिया के नयमो मे जीवन भूला, जैसे मै हूँ
उसके गुण पर रीझी जाती।
घृणित और कुत्सा असीम तक को भी तो यह
प्रेम एक देता है गौरव,
प्रेम नयन से नही देखता, वह तो मन की
आँखो से देखा करता है।
तभी पखमय कामदेव को अधा ही
सब माना करते,
और प्रेम के मन की भी पसन्द को कोई
नही वता सकता है जग मे।

नयनहीन, वस पख, और गतिचवल धावित,
तभी प्रेम को चपल चपल बालक सब कहते,
क्योकि वरण उसके सदैव है आतुरता मे
भूल-भूल से बन जाते है,
खेल खेल मे जैसे बालक दाँव लगाते
प्रेम इसी विधि सब कुछ ही खोया करता है।
डेमेट्रियस हर्मिया के नयनो की छवियाँ
जब न देख पाया था तब तो नित ही आकर
मेरे सम्मुख सौगन्धो का ढेर लगाया
करता था ऐसा रीझा सा !
किंतु वामना का तुषार वह उस प्रेमी का
ज्योही ताप हर्मिया की अनिंद्य छवि का पा
गया अचानक, पिघल गया वह,
सौगधो की बौछारे वे पिघल वह चली !
डेमेट्रियस ! चलूं उसके ही पास चलूं मै !
चलूं ! हर्मिया भाग रही है, उसे बताऊँ।
तब तो वह कल रात करेगा उसका पीछा
वन मे जायेगा वह निश्चय,
हो सकता है हो कृतज्ञ वह मेरे प्रति भी
यह सूचना प्राप्त कर मुझसे !
कितना मँहगा मोल पडा है मुझको सचमुच !
मेरी पीडा घनीभूत होकर समृद्ध हो,
उसे देख कर लौटूंगी मै दु खवद्ध हो !

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वही। क्विन्स का घर]

[क्विन्स, स्नग, बौटम, फ्लूट, स्नाउट, और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स क्या हमारी सारी मडली यहाँ मौजूद है ?

बौटम आप सूची में एक-एक करके नाम पढिये न ?

क्विन्स यह रही सूची, सारे एथेन्स मे ड्यूक और डचेस के सामने खेले जाने वाले रूपक को खेलने के लिये नितात योग्य समझी जाती है। हाँ उनकी शादी की रात को !

बौटम अच्छे पीटर क्विन्स ! पहले बताइये ! रूपक में क्या है ? फिर अभिनेताओ के नाम पढिये, यो धीरे-धीरे बात पर आइये !

क्विन्स हमारा रूपक है, बडा ही दु ख से भरा सुखात नाटक। पाइरैमस और थिस्बी की बडी दर्दनाक मौत होती है।

बौटम वाह-वाह क्या बात है। बडे जोर की रहेगी। अब अच्छे पीट क्विन्स ! जरा अपने अभिनेताओ की हाजरी लेलो। भाइयो, आजाइये यहाँ !

क्विन्स अच्छा बोलता हूँ। हुकारी भरते जाइये। निक बौटम, बुनकर !

बौटम हाजिर हूँ। बताइये मुझे कैसा और किसका पार्ट करना है ?

क्विन्स तुम निक बौटम, बनोगे पाइरैमस।

बौटम पाइरैमस क्या है ? प्रेमी या अत्याचारी ?

क्विन्स प्रेमी, जो प्रेम मे पागल होकर अपने आपको मार डालता है !

बौटम तब तो असली अभिनय के लिये कुछ आँसुओ की ज़रूरत पड जायगी। अगर मैने यह पार्ट किया तो दर्शको की आँखे देखना। तूफान मचा दूंगा, देख लेना। लेकिन पार्ट तो मै असली करता हूँ, अत्याचारी का। अरक्लीज का पार्ट तो कैसा जमता है कि

विल्ली के चिथडे उडा दूं !

हिलती हुई क्रुद्धमान
भयमय घन चट्टान
होती हो कपमान
मुक्त मुक्त कर समस्त वदीगृह-द्वार,
शशि का रथ दीप्तमान
दूर से प्रकाशमान
दूर से ही सिरजमान
फिर मिटाये भाग्यबध जीवित मनुहार !

क्या ऊँची वात है ! हाँ जी अव वाकी अभिनेता ! यह तो अर-क्लीज का जोम था,अत्याचारी का। प्रेमी तो विचारा वडा वोदा होता है !

क्विन्स फ्रान्सिस फ्लूट, धौंकनी वजाने वाला।

फ्लूट हाज़िर हूँ पीटर क्विन्स !

क्विन्स तुम थिस्वी वनोगे फ्लूट !

फ्लूट थिस्वी क्या है ? घुमक्कड वीर योद्धा ?

क्विन्स नही। वह स्त्री है जिससे पाइरैमस प्रेम करता है।

फ्लूट हे भगवान ! मुझे औरत न वनाओ ! मेरी तो दाढी निकलने लगी है।

क्विन्स कोई वात नही। तुम चेहरा चढा लेना और जहाँ तक हो सके कम वात करना।

वॉटम अरे मै चेहरा छिपा लूंगा अपना। थिस्वी का भी पार्ट कर लूंगा मै। मै वडी दिलफरेव पतली आवाज मे वोलूंगा—'थिस्वी ! थिस्वी!' 'आह पाइरैमस ! मेरे प्रेमी ! मै तेरी प्यारी हूँ, मै तेरी थिस्वी हूँ।'

क्विन्स नही, नही। तुम पाइरैमस वनोगे, फ्लूट ही थिस्वी ठीक रहेगा।

बौटम अच्छी वात है। आगे चलिये।

क्विन्स रोविन स्टारवेलिग, दर्जी।

स्टारवेलिग यह रहा मै, पीटर क्विन्स!

क्विन्स रोबिन स्टारवेलिग! तुम थिस्वी की अम्मा वनोगे! टौम-स्नाउट, ठठेरा।

स्नाउट हाज़िर हूँ, पीटर क्विन्स!

क्विन्स तुम पाइरैमस का वाप। मै थिस्वी का वाप। स्नग, लुहार! तुम सिह वनोगे। और मै समझता हूँ, अब सब ठीक पार्ट बँट गये।

स्नग सिह का पार्ट लिखा हुआ है? हो तो कृपा करके दे दे, मुझे देर मे याद होता है।

क्विन्स तुम विना तैयारी के वोल सकते हो। तुम्हे और कुछ नही करना, सिर्फ गरजना है।

बौटम मै ही शेर का पार्ट कर लूंगा। मै गरज लूंगा, ऐसा कि मर्दो का दिल दहल जाये। सच कहता हूँ ऐसा गरजूंगा कि ड्यूक न कह उठे—और गरजो! और गरजो!

क्विन्स और ऐसी जोर से गरजना, कि डचेस और सारी स्त्रियाँ डर जाये, चिल्ला उठे और फिर हम सवको मज़े में फाँसी के फदे मिल जायेगे, इनाम मे।

सव सव लटक जायेगे, औरत के जने सव!

बौटम दोस्तो! मै जानता हूँ कि अगर औरते डर गई तो उनके पास हमे लटका देने के सिवाय कोई चारा ही नही रहेगा? लेकिन मै अपनी आवाज ऐसे वढाऊँगा और इतनी मुलायमियत

से गरजूंगा जैसे चिडिया चहकती है और ऐसा गरजूंगा जैसे कोयल वोल रही हो !

क्विन्स तुम सिवाय पाइरैमस के और किसी का पार्ट नही कर सकते, क्योकि पाइरैमस सुन्दर आदमी है, एक अच्छा आदमी है, ऐसा जैसे ग्रीष्मऋतु होती है, एक वडा सुन्दर आदमी, एक भला-सा लगनेवाला आदमी। इसलिये तुम्हे ही पाइरैमस वनना है।

वौटम अच्छी वात है, मै वन जाऊँगा। अच्छा इसके लिये मै कैसी दाढी लगाऊँ जो सवसे ज्यादा जँचे !

क्विन्स जैसी तुम्हारी मर्जी हो।

वौटम तो मै पीली दाढी लगाऊँ या नारगी रग की छोटी-सी, या कुछ कत्थई, या फ्रेन्च वादशाह की-सी ? विल्कुल पीली !

क्विन्स वहुत-से तुम्हारे फ्रेन्च वादशाहो के वाल ही नही होते और फिर तुम्हारा तो चेहरा खुला रहेगा। लीजिये भाइयो ! यह रहे आपके पार्ट। और मै आपसे विनय करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, विनती करता हूँ कि कल रात तक याद कर डाले सव, और प्रासाद के वन मे मिले, नगर से एक मील दूर, चाँदनी मे। वहाँ अपना रिहर्सल होगा क्योकि अगर हम नगर मे यह सव करेगे तो नगरवासी कुत्तो की तरह मडली को घेर लेगे, हमारी वाते जान जायेगे, तव तक मै नाटक के लिये जरूरी सामानो की सूची वनाता हूँ। देखिये। मेरी वात न मिट जाये !

वौटम जरूर मिलेगे हमलोग। वहाँ तो जम के रिहर्सल होगा, हिम्मत

से, खूब फोश तरीके मे। तकलीफ पाओ, मगर कमाल करो।
विदा।

क्विन्स तो ड्यूक के ओक के पेड के पास मिलना पक्का रहा।

बौटम बस-बस। काफी हुआ। कमान थाम के डोरी काट दो।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[एथेन्स के पास का वन]

[अलग-अलग ओर से एक परी और पक का प्रवेश]

पक कहो परी ! तुम कहाँ घूमती फिरती हो यो !

परी पर्वत, घाटी, वन, हरियाली,
अग्नि, लहर सब पर मतवाली,
मै सर्वत्र घूमती रहती
चन्द्रकला से भी त्वर चलती।
परियो की रानी की दासी
मै हूँ चपला नही उदासी,
हरीतिमा पर सज्जित करती
नीहारो की झिलमिल रचती।
पीले कुसुमो की छवियो में
रहते लाल बिदु मुखरित से,
परियो को वे है अति भाते
मासल दल लगते पुलकित से।
चलूं कही नीहार ढूंढ लूं,
कुसुम-कुसुम के कानो मे अब
लटका दूं मोती मे उज्ज्वल,
विदा, विदा लो, जाती हूँ अब !
ओ हे आत्मा ! समय पास है

परियो की रानी आयेगी
परियो से घिर कर आयेगी,
वेला उनकी वहुत पास है।

पक . आज निशा तो परियो के राजा का रजक
उत्सव होगा किंतु यहाँ पर,
इतना रखना ध्यान कि रानी आये नही दृष्टि में उसकी,
ओवेरोन क्रुद्ध है काफी,
क्योकि आजकल रानी के जो पास एक सेवक है उसका
सुन्दर वालक,
जिसे किसी भारत के राजा से है लाया गया चुरा कर,
ऐसा सुन्दर वाल चुराकर परियो ने जो वदल लिया है
अपना वाला वहाँ अरे ! रख
कभी न पाया ऐसा तो इस रानी ने था।
ओवेरोन ईर्ष्यारत सा चाह रहा है वालक को वह
अपना सेवक स्वय वना ले, ताकि भ्रमण करने में वन मे
सग रहे वह।
किंतु नही तजती वालक को हठ कर रानी।
उसे कुसुम कुड्मल का है शृ गार मनोहर करके
विहँसित स्वय सजाती,
वह उसकी प्रसन्नता का आधार वना है।
अव तो राजा रानी दोनो कभी नही कुञ्जो मे मिलते
नही घूमते हरीतिमाओ की मोहक श्यामल छाया मे
स्फटिक निर्भरो या तारो की मधुर ज्योति मे
कभी न मिलते। उनमे रहता है भगडा ही,
वन प्रातर की परियाँ भय से जा कर फूलो मे छिपती है।

परी : या तो मै पहँचान नही पा रही तुम्हे हूँ,
या तुम हो वह चतुर और चालाक बहुत शैतान
चपलमन
जो कहलाते रोविन सज्जन ! क्या तुम ही वह
नही कि जो भयभीत किया करते हो यो ही ग्राम-
युवतियाँ !
दूध बिलोते या गृहकाजो मे तुम उनको परेशान कर
बहुत सताया करते हो न ?
मदिरा मे से फेन किया करते हो गायव,
रात्रि पथियो को भरमाते, और हँसा करते हो तुम
उनको भटका कर ?
मधुर स्नेह से तुम्हे सभी 'पक' ही तो कहते,
क्योकि काम भी तो उनके तुम कर देते हो ?
लाते हो सौभाग्य ! वही हो ना ? वोलो तो ?

पक तुम कहती हो ठीक ! अरे मै ही हूँ,
मस्त निशाचर, सदा हँसाता ओवेरोन को,
उसका एक विदूषक, जव मै
खाये पिये मस्त कद्दावर घोडे को भी हूँ भरमाता
अरे हिनहिनाकर उठान घोडी के स्वर मे।
कभी गप्प करती औरत के प्याले मे मै
उवला हुआ केंकडा जैसा वन छिपता हूँ
और पिया करती है जव वह, तव मै होठो से टकरा कर
उसकी गर्दन मे झूलती हुई उस मरियल मास-झूल पर
झट शराव फैला देता हूँ।
वहुत चतुर चौकस चाची जो दुख से भरी कथा कहती है

कभी-कभी वह मुझे तिपाई समझ भूलती
और सरकता मैं नीचे से, वह धडाम से गिर जाती है।
वह दर्ज़ी को दोषी कहती, खाँसा करती,
सब हँसते है कमर पकडकर हा हा ही ही,
मस्त झूमते, 'ऐसा वक्त कहाँ मिलता है,' सभी मानते।
किन्तु हटो अब परी ! निहारो लो वह
ओबेरोन आ रहा है अब !

परी : मेरी वह स्वामिनी आ गई ! काश चला जाता यह
राजा।

[एक ओर से ओबेरोन और उसके सेवक तथा दूसरे ओर से अपने
सेवको के साथ टिटानिया का प्रवेश]

ओबेरोन आह चाँदनी का दुर्भाग्य मिल गई
टिटानिया मानिनी हठीली !

टिटानिया अरे ! मिले तुम ईर्ष्याग्रस्त अचानक आ कर
ओबेरोन यहाँ पर ! परियो ! दूर रहो तुम !
मैने इनकी शैय्या, और सग दोनो को अपना
वर्जित सा समझा है।

ओबेरोन ठहरो ! अरे मदाध चचले ! क्या मै नही
तुम्हारा स्वामी ?

टिटानिया तब तो मै स्वामिनी रहूँगी जान रहे हो ?
किन्तु मुझे है ज्ञात कि तुम हो परिस्तान से
छिप कर निकले
कोरिन बन कर सारे दिन है तुमने नरकुल की बसी मे
प्रेम गीत गुजारे है वासनामयी उस फिल्लीडा के हेतु
रीझ कर।

क्यो आये हो कहो इडिया के सुदूरतम मैदानो से ?
पर मत भूलो एमेजौन सुदरी, गमकती वह यौवन
से प्रिया तुम्हारी
जो ऊँचे जूते पहना करती है, अपने योद्धा प्रेमी
अरे थीसियस से ही उसका परिणय होगा। तुम आये हो
उनकी सुख समृद्धि को केवल हर्षित करने।

ओबेरोन टिटानिया ! धिक्कार तुम्हे है।
हिप्पोलिटा ! खटकती है ऐसी नयनो मे ?
अरे थीसियस से है प्रीति तुम्हारे मन मे,
छिपी नही है मुझसे कोई,
पैरीजोनिया, जिससे उसने वलात्कार था किया अरे
नक्षत्रो की झिलमिल छायावाली रजनी मे,
तुमने ही क्या नही दिखाया उसे मार्ग था ?
सुदरि ऐजल, एरिआद्न औ' एन्टिओपिया
से तुमने ही उसके वचनो को झुठलाया !

टिटानिया जालसाजियाँ है यह केवल विद्वेषो की।
हम वसत के मध्यकाल के वाद कभी भी
वन पर्वत घाटी कुञ्जो या सिंधु तीर पर
नही मिले है कही, पवन की गुजारो पर
लटे झुलाते।
अरे तुम्हारे ही झगडे ने केलि हमारी मे वाधा डाली
है ऐसी।
इसीलिये तो गूंज गूंजकर व्यर्थ हमारे हेतु
एक प्रतिहिसा भरकर
सुखा दिया है फेन सिंधु से, जो धरती पर

वरस-वरस कर वना गया है नदी नदी को कर समृद्ध
ऐसा गर्वीला, उमड उमडकर देखो तो छा गई तीर के
सब प्रदेश पर।
अरे इसलिये व्यर्थ हो गया वैलो का वह श्रम यो
जूआ ढोते ढोते
औ' किसान का स्वेद वह गया हाय निरर्थक,
पकने से पहले ही सारा अन्न सड गया,
डूब गये है खेत हाथ से पौधे खोले खडे हुए है,
कौए मृत पशुओ को खा कर मुटा गये है,
नौ-नौ के दल मे जो नृत्य हुआ करते थे सुदर सुदर
शवलित वस्त्र पहनकर
कीचड से भर आज गये है,
पगडडियाँ सघन हरियाली की खोई है,
अव चलता है कौन जो कि वे जानी जाये !
मर्त्य चाहते शीतकाल है,
किंतु रात मे अव सामूहिक गीत नहीं होते पवित्र है,
वाढो की शासिका चद्रदेवी तव ही तो
पीली पड कर महारोप से धोती सारी वायु, और
गठिया की ही भरमार दीखती !
वदल रही है ऋतुएँ सारी। वह तुपार सितशीश
शीत है
मृदुल गुलावो की गोदी मे जा गिरते है।
वृद्ध शीत के पतले हिमकिरीट पर गधित
ग्रीष्मकाल के मधुर फूल, कलियो की माला
दिखती है कैसा कठोर उपहास वनी सी !

रे वसत, ग्रीष्मा, उत्पादक वह हेमत, शीत क्रोधी, सब
यो अभ्यस्त वस्त्र अपने है बदला करते,
और चमत्कृत लोक, वृद्धि से उनकी ऐसे,
अब पहँचान नही पाता है, कौन कौन है ?
यह वुराइयो की परपरा आती है अपने विवाद के
कारण ही तो,
अपने मनमुटाव के कारण, हम है उनके जनक,
मूल कारण है हम ही !

ओवेरोन आओ प्रायश्चित्त करो फिर इसका यह है हाथ तुम्हारे,
अपने ओवेरोन प्राण को टिटानिया क्यो क्रुद्ध वनाये ?
वदला हुआ एक वह वालक ही तो चाह रहा हूँ अपना
सेवक प्रिये ! वनाने तुम से !

टिटानिया मन को करो शात तुम अपने ।
मारा परिस्तान भी वालक का तो मोल न दे पायेगा
मुझको । इसकी माता
मेरे ही पथ की एक थी वह उपासिका,
गधभरी इडियन वायु मे कई निशाएँ
वीती अपनी वाते करते वहुत लुभानी ।
वैठी मेरे साथ अरे वह नैप्च्यून की
पाण्डुरसिकता पर अलबेली
लहरो पर आते निहारते व्यापारीगण,
जवकि मम्त भर पवन फुलाते पाल
गर्भिणी के उदरो मे, हम हँमती थी ।
वह मधुरा तव तैर रही सी किये अनुगमन—
(यह वालक उसके भीतर था जवकि गर्भ मे)

नकल किया करती थी, धरती पर जहाज़ भी,
लौटा करता ज्यो यात्रा से, लदा हुआ वह
मूल्यवान वस्तुएँ लिये ज्यो !
किंतु मर्त्य थी, इसीलिये जब इसे जन्म दे हाय मर गई,
उसके हित मैंने यह बालक पाल लिया है,
और उसी के हेतु नही छोडूंगी इसको,
इसका तो असह्य है मुझको सच वियोग भी।

ओबेरोन इस वन मे कब तक रुकने का है विचार यह
कहो तुम्हारा !

टिटनिया यहाँ थीसियस के विवाह तक रुकने का विचार है मेरा,
यदि धीरज धर तुम भी नृत्य करोगे हममे,
देखोगे ज्योत्स्ना मे अपने आनदोत्सव, सग रहोगे,
और नही तो, छोडो मुझको, चली जाऊँगी
दूर तुम्हारी वास भूमि से।

ओबेरोन दे दो मुझको यदि वह बालक
सग तुम्हारे चला चलूंगा।

टिटानिया सारा परिस्तान भी दे दो, तो भी क्या है ?
परियो आओ ! व्यर्थ ठहरना है अब अपना।
आओ चल दें।

[टिटानिया का सेविकाओ के साथ प्रस्थान]

ओबेरोन जाओ जाओ ! किंतु कुञ्ज से देखूं कैसे जाती हो तुम
जब तक इस कटु तिरस्कार का बदला लेता
नही अभी मैं !
प्यारे पक, तुम सुनो ! याद है एक बार मैं
बैठा था जब अतरीप पर

एक वहाँ पर मत्स्य-अगना
वैठी सागर की मछली पर
ऐसे मीठे स्वर से गाती थी विभोर कर
भीषण सिधु गीत सुन उसका झूम गया था शात
हुआ था ?
टूट गये थे पागल हो कर तव कुछ तारे
मत्स्य-अगना का सुनने को गीत सुरीला !

पक — मुझे याद है।

ओवेरोन — मैने देखा था उस क्षण ही,
तेरा ध्यान नही था उस पर,
शीतचन्द्र औ' पृथ्वी के इस अतराल मे
उडते-उडते सज्जित मन्मथ ने वाँधा था अपना लक्ष्य
ध्यान से
एक कुमारी पर पश्चिम मे वैठी थी जो,
अपने धनु से प्रेम-वाण वह छोड दिया था उसने
उस पर।
वह शर था कि वेध देता लाखो हृदयो को
मन्मथ का ज्वलत शर था वह, पर मैने तो
देखा वह वुझ गया पनीले शशि की निर्मल पूत
रश्मियो मे भीगा सा।
वह विभान्विता उपासिका निश्चल चिंतन मे
रही लीन ही, था कौमार्य्य भाव यो व्यापा
मुक्त कल्पना !
देखा मैने जहाँ गिरा था सर मन्मथ का
एक पश्चिमी मृदुल कुसुम पर गिरा हुआ था,

जो पहले था दुग्ध श्वेत वह
प्रेम-घाव के कारण अब हो गया बैंगनी,
कुमारियाँ उसको पुकारती है —'आलस का प्रेम'
नाम दे।
मुझको ला दो वही फूल तुम, तुम्हे दिखा मै स्वय
चुका हूँ उसका पौधा एक बार हाँ।
उसका मधु यदि सोती पलको पर थोडा सा
आँजा जाये
पुरुष या कि स्त्री, नयन खुले जब जिसको देखे
उस पर ही तन मन से होवे झट न्यौछावर!
लाओ वह बूटी तुम मुझको, जल्दी जाओ,
भीम पोत सागर मे योजन भर न चल सके
उससे पहले ही आ जाओ!

पक — मै चालीस मिनट के भीतर सारी धरती
की परिक्रमा करके आता हूँ बस देखे।

[प्रस्थान]

ओबेरोन — एक बार वह मधु पा जाऊँ!
देखूँगा टिटानिया जा कर सोती है किस जगह, वही बस
जा कर उसके नयनो मे उसको डालूँगा।
नयन खोलते ही जिसको देखेगी, तब वह
सिंह, भेडिया, बैल, नकलची बदर या लगूर भले ही,
पीछे दौडेगी वह उसके भरे प्रेम आत्मा में अपनी।
जडी और है एक पास मेरे जिससे मै इसकी शक्ति
हटा सकता हूँ,
मै उसका बालक ले लूँगा।

अरे कौन आ रहा यहाँ है ? मै अदृश्य हूँ
सुन लूं मै इनकी बातो को ।

[डेमेट्रियस का प्रवेश, पीछे हेलेना]

डेमेट्रियस तुमसे प्रेम नही करता मै, इसीलिये तुम
मेरा पीछा करो न ऐसे ।
लाइसैन्डर है कहाँ ? कहाँ सुदरी हर्मिया ?
मारूँगा मै आज एक को, और दूसरी मुझे मारती है
वह निष्ठुर !
तू कहती थी वे दोनो वन मे आये है यहाँ भाग कर ।
अरे यहाँ हूँ मै इस वन मे, पागल हूँ अब,
मुझे नही दीखती हर्मिया ।
अरी चली जा दूर चली जा, मत आ पीछे ।

हेलेना ओ निष्ठुर पाषाण हृदय । मत मुझे हटाओ ।
क्यो न खीचते खडग लौह का तुम बतलाओ ।
मेरा मन भी इस लोहे सा ही सच्चा है,
स्वय खीचते हो तुम मुझको दोष न मेरा,
आकर्षण की शक्ति छोड दो मेरे प्रियतम,
मै भी यह अनुगमन-शक्ति तब छोडूंगी हाँ,
नही हाय कुछ भी मेरे वश ।

डेमेट्रियस क्या मै तुझे रहा बहलाता ?
क्या मै तुझसे कोई प्यारी बात कह रहा ?
क्या न स्पष्टतम शब्दो मे कहता हूँ तुझसे
तुझे नही करता, कर सकता तनिक प्यार मै ।

हेलेना : इसीलिये तो अधिक प्यार करती हूँ तुमको ।
मै कुत्ता हूँ प्राण । तुम्हारा, सग चलूंगी ।

हे डेमेट्रियस ! जितना तुम मुझको मारोगे
उतना मेरा प्यार उमड तुम पर आयेगा।
कुत्ता जैसा समझ मुझे तुम रख लो प्रियतम !
मारो, कूटो, तिरस्कार कर दो, खो डालो,
केवल इतनी मुझे छूट दो, पीछा मै कर सकूं तुम्हारा !
सचमुच मै अयोग्य हूँ, इतना मुझे ज्ञात है।
आह प्रेम मे प्राण ! तुम्हारे और निम्न क्या
मॉगूं तुमसे,
पर मेरे तो लिये यही वहुत सम्मान मान है,
क्या अपने कुत्ते की भी तुम मुझे जगह दे नही सकोगे ?

डेमेट्रियस मेरी आतमा की कठोर यह घृणा नही तुम
उकसाओ अव अधिक और हॉ !
तुम्हे देख कर ही मिचली सी मुझको आती !
घवरा जाता हूँ मै क्षण मे।

हेलेना मै भी क्षण मे घवराती हूँ जव न दीखते हो तुम
प्रियतम !

डेमेट्रियस अपनी लज्जा को इतना आतुर न वनाओ
दोपो से भर !
नगर त्याग कर, आई हो तुम उसके पीछे
जो न तनिक भी तुम्हे प्यार करता है फिर यह
समय रात का, निभृत विजन है,
और तुम्हारे पास जानती हो क्या क्या है ?
है कौमार्य्य अमोल ध्यान भी इसका आता ?

हेलेना सज्जनता गुण प्राण ! तुम्हारे
है, सर्वाधिकार मेरे ही !

जब मै देखा करती प्रियतम वदन तुम्हारा
रात नही रहती आँखो मे।
मुझे नही दिखता अँधियारा।
इस वन मे भी मुझे नही लगती निर्जनता।
मेरे तो ससार अकेले तुम ही तो हो।
कहो अकेली कैसे हूँ फिर बोलो प्रिय। मै ?
मेरा सारा विश्व देख तो रहा मुझे है ?

डेमेट्रियस अरी भाग कर तुमसे जाऊँ, सघन झाडियो में ही
छिपना मुझे पडेगा।
तुझे हिंस्र पशुओ की करुणा पर छोडे जाता हूँ ले अब।

हेलेना : अरे कौन है अधिक हिंस्र तुमसे यह बोलो।
भले छोड जाओ जब चाहो,
बदलेगी यह कथा स्वय ही,
भाग रहा है आह अपोलो, डैफ्ने करती है अनुधावन,
कैरा घेरे चली ग्रिफिन को, मृगी सिह को, और भीरुता
को निहार कर पौरुष भागा।[1]

डेमेट्रियस अब न प्रश्न का उत्तर दूंगा तेरे कोई,
जाने दे तू मुझको अब तो।
यदि पीछे आयेगी तो सुन
मत कर तू विश्वास सोच ले
कानन मे मै तेरे सग करूँगा निश्चय ही

---

१ अपोलो सूर्य, डैफ्ने ऊशा (वैदिक सस्कृत—दहना)। ग्रीक कथा है, सूर्य्य ऊषा का अनुधावन करता है। ग्रिफिन एक काल्पनिक जन्तु है, जिसका शरीर और पजे शेर के समान और चोंच और डैने बाज पक्षी जैसे माने जाते है।

दुष्कर्म जान ले।

हेलेना मदिर, नगर, खेत सब मे क्या तुमने भला किया है ?
ओ धिक्कार तुम्हे है डेमेट्रियस सुनो तुम !
पाप तुम्हारा है कलक नारी जीवन पर।
हम न प्रेम के लिये युद्ध कर सकती निश्चय,
जैसे पुरुष हाय कर सकते !
हमसे प्रेम किया जा सकता है पर हम तो
प्रेम नही कर सकती सचमुच।

[डेमेट्रियस का प्रस्थान]

आऊँगी मै तेरे पीछे, और नरक को स्वर्ग बनाऊँ,
जिन हाथो से मुझे प्रेम है
उनसे ही मै आज मरूँगी।

[प्रस्थान]

ओबेरोन विदा, अरी ओ ! इससे पूर्व कि तजे कुञ्ज वह
तू उसको पा, फिर वह तेरा
प्रेम स्वय मॉगेगा झुक कर।

[पक का पुन प्रवेश]

ओ यायावर ! तुझे मिल गया बता फूल वह ?

पक हॉ, यह है तो।

ओबेरोन ला ला। मुझको दे तुरन्त तू !
मुझे ज्ञात है एक तीर वह जहाँ जगली
फूल उग रहे,
रग बिरगे कुसुम जहॉ झूला करते है,
छायावाली सघन-सघन हरियाली सब पर मीठी मीठी
स्निग्ध उनीदी छाया करती,

और गुलावो की भौरो से गध महकती,
सुदर-सुदर कुसुम जहाँ पुलकित होते हैं।
वही रात को टिटानिया है कभी-कभी सोती फूलो में
नृत्य और आमोदो मे विश्रात शिथिल हो।
वहाँ साँप केचुली चाँदियो सी चमकीली
छोडा करते,
इतनी वडी कि किसी परी के लिये बने
परिधान पूर्ण वह ,
इसके मधु को मै उसके नयनो मे आँजूं,
घृणित कल्पनाएँ जाग उठेंगी।
ले तू भी कुछ! और कुन्ज मे तनिक ढूढ तू
एक सुदरी है एथेन्स नगर की कोई
पडी प्रेम में घृणापूर्ण कटु हृदय किसी
दुर्दात युवक के।
तू ले जा औ' उसी युवक के नयनो मे यह
मधु थोडा सा तुरत लगा दे,
ऐसी वेला किंतु देखना,
तभी लगाना मधु जव अगले
ही क्षण युवक युवति को देखे।
युवक अरे तू पहँचानेगा देख वस्त्र उसके
एथेन्स के!
सुन्दरि उसमे वहुत प्रेम करती है सुन ले,
ऐसा करना युवक अधिक ही करे प्रेम उस
युवती मे भी।
पहली वाँग भोर मे दे जव ताम्रचूड, तू

उससे पहले ही आ कर के मुझसे मिलना ।

पक · प्रभु ? विश्वास करे, सेवक यह यही करेगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[टिटानिया अपनी परी (परी शब्द स्त्री और पुरुष दोनो का वाचक मानना चाहिये, क्योकि अगरेजी में इसे दोनो के लिये माना जाता है।) साथियो, सेवको के साथ प्रवेश ।]

टिटानिया आओ एक नृत्य हो जाये झूम-झूम कर
घूम-घूम कर, और एक गाना परियो का,
तब क्षण भर हम गर्वित मृदुल गुलाबो के
कीटो को मारे,
और करे चमगादुर मे सग्राम छीन लेने को उसके
चर्म पख, उसके वे जिनसे मेरी प्यारी
छोटी परियो को मिल जाये कोट पहनने को
कानन मे,
कोलाहल करते उल्लू को हटा हटा दे पीछे पीछे,
जो कि हमारे विचरण से हो आश्चर्यान्वित
रात रात भर बोला करता है डरावना ।
गाओ लोरी, मै सोऊँगी ।
फिर तुम अपने लगो काम मे
और मुझे करने दो तुम विश्राम शान्ति से ।

[गीत]

एक परी · ओ रे रग विरगे चचल

दो जिह्वा के नाग
अरी सेहियो, गोह, छुछूंदर,
जाओ जाओ भाग,
सोती है परियो की रानी
करती है विश्राम
उसके पास न आना कोई
वन कर स्वप्न-विराम

[समवेत गीत]

लोरी गा,
कोकिले! मंद मीठे सुरीले मधुर
राग से वायु में प्रीति तू आज भर
लोरी गा!
कर नही हानि तू, कर न जादू अरी,
सो रही सुन्दरी नीद से है भरी
लोरी गा!
मूंद ले तू नयन अव विदा, अव विदा
स्वप्न मे सुख मिले प्यार जागे सदा,
लोरी गा!

[गीत]

एक परी — जाला वुनने वाले मकडे
यहाँ न आना पास,
वुनकर मकडे लवे डग धर
यहाँ न लेना श्वास।
काली मक्खी, पास न आना

घोघे रहना दूर।
कीट पतगो ! यहाँ न ऊधम
करना, रहना दूर।
[समवेत गीत]
लोरी गा !
[इत्यादि]

दूसरी परी अब सब कुछ है ठीक
चलो अब दूर हटो सब !
प्रहरी बन कर एक रहे औ'
शेष हटो सब !

[परियो का प्रस्थान। टिटानिया सोती है। ओबेरोन का प्रवेश और वह टिटानिया की पलको पर फूल को निचोड देता है।]

ओबेरोन जब तू जग कर देखेगी, जो दृष्टि पडेगा
उससे ही होवेगा रानी ! प्रेम तुझे झट,
उसके ही हित तडपन तुझमे पैदा होगी,
वह कुछ भी हो, बिल्ली, भालू चीता या फिर
कडे बाल वाला सूअर जगली भयद ही।
जगते ही यदि तेरे वह सामने दिखेगा
उमडेगा तुझमे तब गहरा प्यार बडा ही।
जब हो कोई अधम जीव सन्निकट तभी तू
जगना, उसके गहन प्रेम मे तू पड जाना।
[प्रस्थान]

[लाइसैन्डर और हर्मिया का प्रवेश]

लाइसैन्डर प्रिये, हो गई श्रान्त हाय कानन मे चलते ?

सच तो यह है, राह गया हूँ भूल यहाँ मैं।
अहे हर्मिया ! आओ कुछ विश्राम करें हम, कहो
ठीक है ?
दिन की थकन मिटा ले आओ हम कुछ वेला।

हर्मिया — हाँ लाइसैन्डर ! यही ठीक है। शैय्या रच लो तुम
अपने हित,
मैं तो इस तट पर सिर धर कर अब लेटूँगी।

लाइसैन्डर — यही दूब होगी प्रिय, हम दोनो का तकिया,
एक हृदय, शैय्या भी अपनी एक, वक्ष दो,
किंतु सत्य विश्वास एक ही।

हर्मिया — नही ! प्राण लाइसैन्डर ! मेरे हित यह मानो
इतने पास अभी मत लेटो, रहो दूर कुछ।

लाइसैन्डर — प्रिये ! शुद्ध मन है मेरा यह तुम पहँचानो।
आह प्रेम संगीति प्रेम तात्पर्य्य धारती।
मै कहता हूँ मेरा मन अब उलझ बुन गया
कितना प्रिये ! तुम्हारे मन से !
अब तो यह है एक हृदय ही।
दो है वक्ष शृंखला मे बँध गये एक ही पूत शपथ की।
दो है वक्ष किंतु है उनका सत्य एक ही।
अपने पास मुझे सोने दो, अब मत रोको,
आह हर्मिया ! यह लेटना असत्य न होगा।

हर्मिया — आह चतुर बाते करते हो तुम लाइसैन्डर !
मेरा गर्व और आचार सकल क्या बोलो
क्या कह सकता लाइसैन्डर मे भी असत्य है !
मीत सुहाने ! प्रेम और दाक्षिण्य दूर ही तो रहते है,

मानव लज्जा मे वियोग यह कुमारिका का
सद्‌गुण ही है,
है कुमार का भी तो गुण ही, यो रहे दूर हम।
मेरे प्रियतम ! अब सो जाये!
प्रेम तुम्हारा इस सुदर जीवन के अतिम छोर तलक तो
मिट न सकेगा !

लाइसैन्डर हो तथास्तु इस सुघर प्रार्थना पर हे बाले !
हो जीवन का अत वही जब अत सत्य-विश्वास-प्रेम का
होवे प्रेयसि !
यह है मेरी शैय्या ! अरी निंदिया मेरी
सुमुखि हर्मिया को दे मीठी शाति मधुरतम।

हर्मिया इस प्रार्थी के नयनो को आ नीद सलोनी
शुभ कामना बाँट कर दे दे, और सुला दे।

[दोनो सोते हैं। पक का प्रवेश]

पक ढूंढ चुका मै सारा कानन
वह एथेन्स निवासी मुझको दिखा न पल क्षण,
जिसके नयनो पर है मुझको मधुर कुसुम का
रस डालना कि उसका प्रेम जगे झट उमडा।
रात और निस्तब्धा है, हैं ? ये यहाँ कौन है ?
यह एथेन्स के वस्त्र पहन लेटा विमौन है,
यही यही है, जिसको मै प्रभु की आज्ञा से
ढूढ रहा था, यही यही है तिरस्कृता उसकी बाला रे
दोनो गहरी नीद सो रहे गँदली भू पर !
केवल है आकाश विजन इन दो के ऊपर
सुन्दरि बाला ! साहस इतना भी न कर सकी

सोती निठुर पिया के बिल्कुल पास मस्त सी।
यह दाक्षिण्य विहीन और निष्ठुर है कितना,
तो ले कुसुम! मिटा दे इसका यह कटु बनना,
अपनी सारी शक्ति लगा दे जादू कर दे,
जब यह जागे इसको तू परिवर्तित कर दे,
जागे, पलके खुले, दृष्टि जब पडे प्रिया पर,
पलको पर से प्रेम उतर कर मिले विहँस कर।
जब मै जाऊँ तभी जागना,
मुझको ओबेरोन निकट अब जल्दी जाना।

[प्रस्थान]

[डेमेट्रियस और हेलेना का भागते हुए प्रवेश]

हेलेना आह प्राण तुम मुझे मार कर ही जो जाओ।

डेमेट्रियस मै कहता हूँ, सावधान अब
और न कर तू पीछा मेरा।

हेलेना क्या तुम मुझको अधकार मे छोड जाओगे,
हाय न ऐसा करना प्रियतम!

डेमेट्रियस : अपने ही साहस पर रह तू। मै तो अब से
देख अकेला ही जाऊंगा।

[प्रस्थान]

हेलेना आह दौडते हुए इस तरह पीछे पीछे
मै हूँ थकी हुई कितनी हा,
जितनी विनती की उतना ही पाया मैने तिरस्कार है।
अरे हर्मिया कितनी है सौभाग्यशालिनी,
भले कही वह रहे, क्योकि है
उसके नयन बहुत आकर्षक मोहक उज्ज्वल!

कैसे है वह ! क्या खारे आँसू उनको ऐसा करते है ?
मेरे भी तो नयन अश्रु से बहुत धुले है।
नही नही, मै तो कुरूप हूँ जैसे भालू।
जो मिलते है जतु मुझे वे डरे हुए से
भाग भाग जाते है कैसे !
क्या आश्चर्य्य कि डेमेट्रियस भी भागा जाता
मेरी उसे उपस्थिति इतनी अप्रिय लगती,
जैसे दैत्य देख कर सब है बिजका करते।
ओ दुरन्त अति क्रूर नीच दर्पण वह मेरा
जिसने मुझको सुघर हर्मिया के सुन्दर उज्ज्वल
नयनो से
अपनी तुलना करने का साहस दे डाला !
पर यह कौन यहाँ है ? लाइसैन्डर धरती पर !!
मृत है ? या है सुप्त ! नही है रक्त यहाँ पर,
नही घाव है,
लाइसैन्डर यदि जीवित हो तुम, तो फिर जागो !

लाइसैन्डर (जाग कर) अहा तुम्हारे लिये अग्नि मे भी चलने मे
भीत न होऊँगा मै प्रेयसि !
आह हेलेना ! तुम सौंदर्य्य पारदर्शी हो !
प्रकृति कला का चमत्कार तुम मे दिखलाती।
अरे तुम्हारे वक्ष मधुर मे से मुझको है हृदय तुम्हारा
स्पष्ट दीखता।
डेमेट्रियस कहाँ है ? बोलो वह जघन्य है
मेरी यह तलवार-धार पर कट जाने के ही लायक वह !

हेलेना कहो नही ऐसा लाइसैन्डर ! ऐसा निश्चय,

क्या है यदि हर्मिया तुम्हारी उसको प्रिय है ?
फिर भी तो हर्मिया प्यार करती है तुमसे,
यही नही क्या वहुत कि तुमको शाति दे सके ?

लाइसैन्डर
अरे हर्मिया को जाने दो ।
इसके सग विताये क्षण से ऊव गया मै ।
मुझे हर्मिया नही, प्रेम है तुमसे मेरी सुघर हेलेना !
तर्कों से मनुष्य की इच्छा डोला करती,
पर ऋतु आने के पहले फल कब पकता है ?
अब तक मै था अपरिपक्व, अविवेकी सचमुच,
अब जो मुझ मे वुद्धि आ गई,
मै उचितानुचितो का हूँ यह ज्ञान पा गया,
प्रिये तुम्हारे नयनो की ही ओर ठेलता
जाता है मुझको विवेक तो,
नयन तुम्हारे ! आह प्रेम की सुन्दर पुस्तक से
समृद्ध है—
मुझे दीखती उनमे कितनी मीठी मधुर
प्रेम की गाथा !

हेलेना
क्या इतने कटु व्यग्य और विद्रूप हेतु ही
हुआ जन्म था मेरा बोलो !
क्या मैने है किया कि तुमने इतनी घृणा हाय बरसाई
मेरे ऊपर !
क्या यह ही है नही हाय काफी मुझको, हाँ काफी मुझको
डेमेट्रियस स्नेह मे मुझको नही देखता, हाय नही
देखेगा मुझको,
क्या मेरे अभाव की तुमको भी निर्मम कचोट

करनी है ?
हे भगवान ! शपथ है ! यह अन्याय गहन है,
कैसी घृणा प्रेम के छद्मो मे प्रगटी है,
विदा, सत्य कहती हूँ जब तुम विवश कर रहे
मैंने समझा था तुमको सज्जन विनम्र ही।
आह ! हाय मै तिरस्कृता जो एक पुरुष की,
पुरुष दूसरा मुझसे है उपहास कर रहा !

[प्रस्थान]

लाइसैन्डर : उसने है हर्मिया न देखी। अरी हर्मिया तू सोती रह,
अब लाइसैन्डर के समीप तू कभी न आना।
मिष्टान्नो की अति भी तो है अरुचि जगाती
नास्तिकता है जैसी अपनी घृणा जगाती,
मै भी तुझ से घृणा, घृणा करता हूँ अब तो !
जो कुछ शक्ति प्रेम तुम पर था अब वह सारा
हेलेना पर जा केन्द्रित हो, वह मेरी हो !

[प्रस्थान]

हर्मिया (जाग कर) मुझे बचाओ लाइसैन्डर ! तुम मुझे
बचाओ !
मेरी छाती पर यह देखो साँप चढ रहा, इसे हटाओ !
हे री करुणे ! वह सुपना था !! लाइसैन्डर ! देखो
मै अब तक
काँप रही हूँ, मुझे लगा था साँप हृदय खाता था मेरा
और मुझे मरते निहार तुम निष्ठुरता से मुस्काते थे !
लाइसैन्डर !! है, यहाँ नही हो ! लाइसैन्डर !
स्वामी ! क्या अब तुम

सुन न रहे हो ? चले गये हा ! शब्द नही, ध्वनि
हीन, बात तक कही न मुझसे ?
अरे कहाँ हो ? बोलो बोलो ! सुन न रहे हो ?
उन प्रेमो की याद करो कुछ ! हाय भीत मै
मूर्च्छित होती !
नही ! नही तुम पास स्पष्ट मै देख रही हूँ ।
प्राण ! मृत्यु या तुम्हे शीघ्र ही पा लूंगी मै ।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[वन। टिटनिया सो रही है। क्विन्स, स्नग, बौटम, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

बौटम क्या हम सब आ गये ?

क्विन्स अरे वाह! क्या लाजवाब जगह है रिहर्सल करने के लिये। यह हरा-भरा मैदान—छोटा-सा—हमारा रंगमंच होगा, यह झाडी हमारा नेपथ्य, अब ऐसा ही कर डाले जैसे ड्यूक के सामने ही करना है।

बौटम पीटर क्विन्स

क्विन्स क्या है बकबकिया बौटम ?

बौटम पाइरैमस और थिस्वी के सुखान्त नाटक मे कुछ ऐसी चीजे है जो कभी अच्छी नही लग सकती। पहले तो पाइरैमस इसमे आत्महत्या करने को तलवार खीचेगा जिसे बडे घरानो की स्त्रियां बिलकुल बर्दाश्त नही कर सकेगी। इसका जवाब दो!

स्नाउट माता मेरी की सौगध! बडा डरावना रहेगा।

स्टारवेलिंग मै समझता हू कि मौत को हटा दिया जाये जब सब काम हो जाये।

बौटम अजी बिल्कुल नही। मै बनाऊँ तरकीब, सब ठीक हो जाये। एक प्रारभिक वक्तव्य कविता मे लिखा जाये जिसमे यह कहा जाये कि हम अपनी तलवारो मे कुछ नुकसान करना नही चाहते और पाइरैमस नही मरा, बल्कि ज्यादा तसल्ली दे देने के लिये, उनसे

कहा जाये कि मैं पाइरैमस असल मे पाइरैमस नही हूँ, बल्कि वौटम—बुनकर हूँ और इससे उनका डर दूर हो जायेगा।

क्विन्स : अच्छी वात है। वक्तव्य लिखा जायेगा और उसे आठ और छ चरण वाले छद मे लिखा जायेगा।

वौटम नही दो और वढा दो ! आठ और आठ कर दो।

स्नाउट अच्छा स्त्रियो को शेर से डर नही लगेगा ?

स्टारवेलिंग मुझे तो इसका वडा डर है, यकीन मानना।

वौटम भाइयो ! कलाकारो ! आपको आखिर खुद भी तो कुछ सोचना चाहिये। भगवान वचाये, औरतो मे एक शेर को ले आना, कितनी भयानक चीज है। भला जीते-जागते शेर से ज्यादा डरावना क्या होगा। ऐसा करना तो वडा खौफनाक जुर्म है। हमे इस पर जरूर ध्यान देना चाहिये।

स्नाउट : तव एक वक्तव्य इसका भी जोड दिया जाये जिसमें कहा जाये कि वह शेर नही है।

वौटम नही, तुम्हे उसका नाम वताना चाहिये, वल्कि अभिनेता का आधा चेहरा भी शेर की गर्दन मे से दीखता रहना चाहिये और उसे खुद वोलना चाहिये कि 'देवियो ' या 'सुदर देवियो, मै अनुनय करता हूँ', या 'मै निवेदन करता हूँ', या 'मेरी प्रार्थना सुनिये—डरिये नही, काँपिये नही ,आपकी जान के लिये मेरी जान हाज़िर है। अगर आप यह समझती है कि मै यहाँ शेर वनकर आया हूँ, तो इससे वढ कर अफसोस की वात मेरे लिये और क्या होगी ? नही, मै ऐसी कोई चीज नही हूँ, मै तो औरो की तरह ही एक आदमी हूँ।' और वस उस वक्त उसे अपना नाम वताना चाहिये। साफ-साफ कह दे, मै हूँ स्नाउट—लुहार !

क्विन्स ठीक है, ऐसा हो जायगा। लेकिन दो मुश्किले है। वह यह कि

चाँदनी को भीतर कमरे मे लाना है क्योकि तुम तो जानते ही हो कि पाइरैमस और थिस्बी की मुलाकात चाँदनी मे हुई थी।

स्नाउट जिस रात हम नाटक करेगे उस दिन चाँदनी निकलेगी ?

बौटम कैलन्डर लाओ कैलन्डर। पञ्चाङ्ग मे देखो। चाँदनी को ढूंढो। चाँदनी को ढूंढो।

क्विन्स हाँ, उस रात चाँदनी छिटकेगी।

बौटम तब तो एक खिडकी बना दी जायेगी जिसमे से चाँदनी आ जायेगी। उसे खोल देगे।

क्विन्स या फिर एक काम किया जाये। एक कँटीली झाडी और लालटैन ले कर एक आदमी आ जाये और कह दे कि वह चाँदनी बन कर आया है। अच्छा अब दूसरी परेशानी सुनो। हमे बडे कमरे की दीवाल भी चाहिये। क्योकि कहानी मे पाइरैमस और थिस्बी उस दीवाल के छेद मे से बाते करते है उधर खडे हो कर।

स्नाउट दीवाल तो तुम कभी ला ही नही सकते। क्या राय है बौटम !

बौटम किसी आदमी को ही दीवाल बनना पडेगा। उस पर कुछ पलस्तर चढा रहे, कुछ चूना, कुछ अनगढपन हो, ताकि वह दीवाल-सा लगे। वह अपनी उँगलियाँ ऐसे रखे और उनके छेद से पाइरैमस और थिस्बी बाते कर लेगे।

क्विन्स अगर यह हो गया, तो सब ठीक है। आओ बैठे, हर माई का लाल आये। चलो रिहर्सल कर ले। पाइरैमस ! तुम शुरू करो। जब तुम अपनी बात खतम कर चुको तो उस झाडी मे घुस जाना, ऐसे ही हर एक करना।

[पीछे से पक का प्रवेश]

पक — अरे कौन है ये उजड्ड शेखी भरते यो
परियो की रानी की शैय्या के समीप ही ?
अच्छा ! तो नाटक होने की तैयारी है !
तव मै इसकी जाँच करूँगा,
अगर ज़रूरत समझूँगा तो बन जाऊँगा
अभिनेता भी ।

क्विन्स · बोलो पाइरैमस ! थिस्वी ! खडी हो जाओ इधर ।

बौटम . थिस्वी ! गधायमान यह मधुर कुसुम ·

क्विन्स गधायमान ! गधायमान !

बौटम · गधायमान यह मधुर कुसुम, प्रेयसि ऐसी
है साँस तुम्हारी हे थिस्वी !
यह कैसी ध्वनि ! है ? सुनो ! अरे
मै आता हूँ लो दो क्षण मे ··
आता हूँ देखो अभी अभी

[प्रस्थान]

पक . कभी न आया यहाँ कभी ऐसा पाइरैमस···
लाजवाब है

[प्रस्थान]

फ्लूट अब मुझे बोलना है ?

क्विन्स हाँ जी, तुम्हे ही । पर यह समझ लो कि बाहर कोई आहट हुई है, वह उसे देखने भर गया है और अभी आ जायेगा ।

फ्लूट — ओ पाइरैमस ऊर्ज्जस्वित यौवन गरिमामय,
अरे श्वेत अति भव्यकुसुम से ज्योतित सुदर
जैसे किसी कटीली दुर्गम झाडी पर गुलाब हो कोई,

कितना यौवन यह उन्नद्ध ! यहूदी है उपनाम बना ज्यो
सुदर शोभित !
घोडे जैसे वफादार, जो कभी न थकता,
तुम्हे मिलूंगा पाइरैमस ! फिर
मै निन्नी की उस समाधि के पास

क्विन्स : निन्नी नही निनस।[1] क्या यार तुम ? यह अभी से क्यो बोल गये ? यह तो तुम्हे पाइरैमस को जवाब देना है। तुम तो अपना सारा पार्ट एकदम बोल पडे ! यह नही देखा कि यह सवाद कितने टुकडो मे है और दूसरे के वाक्यो का आखिरी शब्द भी आपने अपने वाक्य मे ही जोड डाला। पाइरैमस आता है, तुम्हारी बात खतम होती है—बस थकता पर।

फ्लूट ओह !
अच्छे से अच्छे घोडे-सा जो न कभी भी सचमुच थकता।

[पक का पुन प्रवेश। सग में बौटम है, पर अब उसके कधो पर उसका सिर नहीं गधे का सिर है।]

बौटम सुदरि थिस्बी ! यदि मैं मै हूँ, तो केवल मैं तो तेरा ही हूँ।

क्विन्स : भयानक ! भूत ! अद्भुत ! पिशाच आ गया ! भाइयो भागो ! बचाओ ! बचाओ !

[क्विन्स, स्नग, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का भागना]

पक किंतु करूँगा मै तो पीछा अभी तुम्हारा
दौडाऊँगा तुम्हे खूब मै, दलदल, झाडी
झाड, फाँस मे,

---

१ बाइबिल में वर्णित निनेव नगर का किंवदन्तियों में वर्णित निर्माता, बैबीलोन की रानी सेमीरैमिस का पति।

कभी बनूंगा घोडा, कभी शिकारी कुत्ता, सूहर,
या भालू मै बनूं निमुण्डा, आग कभी मै,
हिनहिनाऊँगा, फिर भौकूंगा, ग्रन्ट करूँगा,
गरजूंगा या मै धधकूंगा क्रमश
घोडा, कुत्ता, सूहर, भालू, अग्नि बना बारी-बारी से।

[प्रस्थान]

बौटम यह लोग भाग क्यो रहे है ? यह मुझे डराने के लिये इन लोगो की बदमाशी है।

[स्नाउट का पुन प्रवेश]

स्नाउट ओ बौटम ! तुम तो बदल गये हो ! मै तुम पर यह क्या देख रहा हूँ ?

बौटम क्या देख रहे हो ? अपनी जैसी गधे की खोपडी देख रहे हो ! है न ?

[स्नाउट का प्रस्थान, क्विन्स का पुन प्रवेश]

क्विन्स भगवान तुम्हे बचाये बौटम ! भगवान रक्षा करें। तुम तो बिल्कुल बदल गये हो !

[प्रस्थान]

बौटम अब समझा इनकी बदमाशी। वे मुझे गधा बनाना चाहते है ? मुझे डराना चाहते है ? काश वे ऐसा कर सकते ! लेकिन मै यहाँ से टस से मस नही होऊँगा। कर लेने दो उन्हे, जो चाहे कर ले ! मै तो यही टहलूंगा और यही गाऊँगा और वे भी सुन ले कि मै डरा नही हूँ।

[गाता है।]

काला मुर्गा रँग का स्याह
पीली पीली चोच, भोला,

थ्रीसल चिडिया गाना गाये,
रैन चिडिया ले पख पोला,

टिटानिया (जाग कर) इस कुसुमो की शैय्या से यह कौन भला-सा
देवदूत है मुझे जगाता

बौटम [गीत]

फिन्श, लार्क औ' अबाबील औ'
गाती कुक्कू मस्त हाँ हाँ
उसका गीत अनेको सुनते
मना न करते सुन कर हाँ हाँ

और यह सच है कि चिडिया की वेवकूफी से टक्कर लेने को किसके पास फालतू दिमाग है ? चिडिया से कौन झूठ वोले ? 'कुक्कू' पुकारा करे, पर ऐसा कभी नही होता।

टिटानिया गाओ फिर प्रिय मधुर मर्त्य हे, विनय कर रही हूँ
मै तुमसे,
गीत तुम्हारा सुन कर मेरी श्रुति मे कैसा अमृत वरसता,
देख तुम्हारा रूप नयन मेरे पुलकित है,
आह तुम्हारे गुण को वरवस मेरे मुंह से कहलाते है
प्रथम दृष्टि मे ही मै तुम पर रीझ गई हूँ,
शपथ सत्य है, मुझे प्यार है तुमसे गहरा !

बौटम : श्रीमती ! मुझे तो आपके ऐसे कहने की कोई वजह दिखाई नही देती ! और सच तो यह है कि आजकल विवेक और प्रेम साथ-साथ तो रहते ही नही। और क्या अफसोस की वात है कि कोई भला मानस पडोसी भी उनमे दोस्ती नही कराता। नही, मै मौके पर दिल्लगी उडा सकता हूँ।

टिटानिया जितने हो सुन्दर उतने हो वुद्धिमान भी !

बौटम नही, बिकुल गलत। अगर मुझमे इस जगल से भाग निकलने की अकल होती तो जरूर मै इससे अपनी नौकरी बजवा लेता।

टिटानिया इस वन से जाने की इच्छा करो न किंचित् !
तुम चाहो या नही, किंतु इस कानन मे ही
रहना होगा तुम्हे, जान लो,
मै साधारण परी नही हूँ,
मेरे शासन मे रहती है ग्रीष्म सुहावन,
और प्रेम है मुझको तुमसे, चलो सग अब मेरे आओ
मै दूंगी परियाँ तुमको जो,सतत तुम्हारी तन्मय हो कर
सेवा नित्य करेगी, सचमुच
महासिंधुओ मे से उज्ज्वल रत्नो को वे ले आयेंगी
देगी तुमको, गीत सुना कर तुम्हे रिझायेगी
मीठे स्वर गुंजित करती,
जब तुम फूलो की शय्या पर सुखनिंदिया मे प्रिय
सोओगे।
और तुम्हारी मर्त्य स्थूलता इस प्रकार मै
दूर करूँगी तुमसे, तुम भी परिस्तान के प्राणी
जैसे ही दीखोगे !
अरे पीज ब्लौसम ! मस्टर्ड सीड, आओ हे मौथ !
कौबवैब !

एक परी प्रस्तुत हूँ मै

दूसरी परी मै भी तो हूँ,

तीसरी परी मै हूँ देखो

चौथी परी लो मै भी हूँ।

सब . कहाँ जाये हम ?

टिटानिया इन सज्जन के प्रति विनम्र हो रहो सभी तुम
जब यह चले चलो तुम इनके संग नाच कर,
करो किलोल रिझाओ इनको,
औ' अखरोट और वन के मीठे फल लाओ
हरे-हरे अजीर बैगनी अंगूरो के गुच्छे लाओ
इस सम्मानित मधुर अतिथि को खूब खिलाओ।
दीना ममाखियो के मधु के छत्ते लाओ चुरा चुराकर
उनकी मोमिल जाँघें काट लाओ बत्ती सी
उन्हे बना कर जुगनू के नयनो की उज्ज्वल
दीप्त शिखाओ पर सुलगाओ
विभावरी मे,
मेरे प्रियतम को शैया पर ले जाओ औ' निद्रित कर दो
और जगाओ !
रंगविरंगी सुघर तितलियो के रंगीन पंख तुम लाओ
इनके मुद्रित नयनो से रश्मियाँ चंद्र की
उन पंखो से झलो उन्हे पंखा सा लेकर।
शीश झुकाओ इन्हे अरे तुम नमस्कार कर
परियो ! आओ।

एक परी अहे मर्त्य हो विजय तुम्हारी।

दूसरी परी जय हो ! जय हो !

तीसरी परी जय हे ! जय हे !

चौथी परी जय जय ! जय जय !

बौटम हे श्रीमान् ! हृदय मे कहता हूँ मुझ पर दया करे । पूजनीय

का शुभ नाम क्या है ! जान सकता हूँ ?

कौब वैब कौब वैब !

बौटम जरा और कुछ जानकारी हासिल करा देते श्रीमान् कौबवैब अपनी ! अगर मै अपनी उंगली काट लूं तो आपसे मेरी हिम्मत खुल जाये। श्रीमान् आपका शुभ नाम ?

पीज़ ब्लौसम पीज़ ब्लौसम !

बौटम मै प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपया श्रीमती स्क्वैश[1], अपनी माता और श्रीमान् पीस्कौड[2] अपने पिता को मेरी याद दिला देते। श्रीमान् ! आपसे तो मै और भी परिचित होना चाहूँगा। हाँ, आपका क्या नाम है श्रीमान् ?

मस्टर्ड सीड मस्टर्ड सीड !

बौटम अच्छा श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपका धैर्य्य तो मै खूब जानता हूँ। वह जो कायर है न ? दानव जैसा साँड ! वह आपके घराने के कितने ही भलेमानसो को चबा कर खा चुका है। आपके घराने की बरबादी ने तो मेरी आँखो में आँसू भर दिये ! श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपसे मै और जानकारी पाना चाहता था।

टिटानिया : आओ इनकी सेवा करो, ले चलो इनको
मेरे फूलो की झुरमुट में, मधुर कुञ्ज मे,
चंद्रकला[3] भी नयन पनीले ले कर देखो देख रही है,
जब वह रोती है तब रोता है हर एक कुसुम लघुतम भी,
किसी विवश बंधन अभिलाषी का विलाप कर,
आह बाँध दो मेरी जिह्वा सुघर प्रेम की,
इन्हे शांति से ले आओ तुम !

[प्रस्थान]

---

१. रस २ मटर ३. शशि स्त्रीलिंग है अंग्रेजी में—यूरोप में।

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[ओबेरोन का प्रवेश]

ओबेरोन टिटानिया जागी है अब तक या सोई है ?
जगते ही क्या आया होगा सबसे पहले
दृष्टिपथ मे उसके जिस पर वह तन मन से
न्यौछावर हो गई भूल होगी सब कुछ को !

[पक का प्रवेश]

लो यह आया है मेरा सदेसा लाने-
वाला प्रिय है दूत, कहो अब मुझसे
ओ मतवाले !
समाचार है क्या बतलाओ
परिस्तान का आज निशा मे ?

पक मेरी स्वामिनि पडी हुई है एक दैत्य के कठिन प्रेम मे !
वही कुञ्ज मे है वह अपने मधुर छाय मे,
सोई थी जब शिथिल अग वह
आये कुछ कारीगर वहाँ अधम श्रेणी के
जो एथेन्स की दूकानो मे रोटी अपनी जुटे कमाते
अनगढ से खूद, हे स्वामी !
नाटक एक रचाने को अभ्यास कर रहे
अहे थीसियस के विवाह के वैभव को द्विगुणित
करने को,
उनमे सबमे मूर्ख और जड खोखल-सिर जो
पाइरैमस का पाठ कर रहा था, वह अपना

करके पार्ट तनिक झाडी मे पहुँचा ज्योही
मैने उसको घेर लिया मौका झट पा कर,
तुरत गधे का सिर उसके चेहरे पर मैने
चढा दिया तब,
तभी उसे अपनी थिस्वी को उत्तर देने
नाटक मे था पुन पहुँचना,
बस फिर तो दिल्लगी हुई आरभ वही से।
सग साथियो ने जब उसके, उसको देखा,
तो जैसे लुक छिप करके रेगते व्याध को
देख जगली बतखे सहसा,
या मटमैले लाल पाँव के कौए डर कर
काँव-काँव कर उडते है आवाज अचानक
सुन बदूक कठिन की आतुर,
बिखर-बिखर कर उडते है नभ में घबराये
त्यो उसको निहार कर उसके सगी साथी
डर कर भागे।
पगध्वनि और हमारी सुन कर
गये लडखडा गिरते पडते एक दूसरे पर टकराते
'खून खून' चिल्लाते देते वे एथेन्स की घोर दुहाई,
बुद्धि दीन से डर के मारे काँप उठे जो सबल हो उठा।
यो विवेक खो बैठे उल्टे सीधे करने लगे काम वह।
काँटे भी चुभ गये बिध गये उनके तन मे,
कपडो मे, टोपी मे, सब मे गडे निठुर वे,
उस भय मे मैने उनको तब दूर भगाया,

और परम सुन्दर उस पाइरैमस को मैंने
वही रूप-परिवर्तित छोडा,
ऐसा हुआ कि बस उस क्षण ही
जागी टिटानिया और पहली दृष्टि उसी पर
पडी अचानक, और तुरत ही
पडी गधे के महा प्रेम मे रानी सहसा ।

ओबेरोन वहुत श्रेष्ठ हो गया कि मैंने नही कल्पना भी की इसकी।
पर क्या तूने
उस एन्थेस निवासी की आँखो मे भी क्या
डाल दिया मधु उसी कुसुम का, जैसे मैंने
आज्ञा दी थी तुझे कि तू अवश्य करना यह ?

पक मैंने उसको सोते पाया। काम कर दिया वह भी मैंने,
थी एथेन्स की युवति पास ही सोती उसके,
जव जागेगा वह अवश्य देखेगा उसको !

[हर्मिया और डेमेट्रियस का प्रवेश]

ओबेरोन इधर खडे हो हट कर देखो
यह ही है वह पक ! एथेन्स निवासी, है न ?

पक वही वही है स्त्री पर यह वह पुरुप नही है।

डेमेट्रियस आह प्रेम करता जो तुमसे उसका इतना
क्यो करती हो तिरस्कार तुम ?
किसी क्रूर रिपु पर ही अपना तिक्त रोप यह
तुम वरसाना ।

हर्मिया तिरस्कार करती हूँ केवल, किन्तु मुझे तो
कही अधिक करना कुछ तुमसे और चाहिये ।

मुझे लग रहा, तुमने मुझे दिया है कारण
जो मै तुम्हे शाप भीषण दे सकूं मुक्त स्वर।
यदि तुमने ही लाइसैन्डर की सोते मे हत्या की है तो
ओ रुधिरार्द्र! मुझे भी मारो! खो दो मुझको घन गभीर मे।

नही सूर्य्य भी हो सकता है दिन के प्रति इतना सच्चा सच
जितना था लाइसैन्डर मुझको!
क्या सोती हर्मिया छोड वह जा सकता था?
मै मानूंगी सहज कि धरती ऊब चुकी है,
चद्र मध्य मे से खण्डित होगा,[1]
पर तुम हत्यारे हो नही, नही मानूंगी,
तब ही तो तुम इतने भीषण हो गभीर हो!

डेमेट्रियस बँधा हुआ हूँ, तभी लग रहा हूँ मै ऐसा,
यह कठोर निर्दयता तेरी वेध गई है मेरे उर को।
ओ वधिके! फिर भी तू कितनी सुदर लगती
जैसे शुक्र नखत लगता है नील व्योम मे!

हर्मिया लाइसैन्डर की बात त्याग दी? अरे कहाँ वह?
डेमेट्रियस सुजन बतलाओ, क्या तुम उसको
नही सौप दोगे फिर मेरे इन हाथो मे?

डेमेट्रियस मै उसका शव दूंगा अरे शिकारी भीषण कुत्तो को ही।

हर्मिया ओ कुत्ते! ओ अधम श्वान! तू विवश कर रहा
मुझे कि मै कौमार्य्य-धैर्य्य की मर्यादा का

---

१ मूल में एक कथा का उल्लेख है जिसमे हिन्दी में प्रवाह रुकता है, अत. भावानुवाद किया है।

उल्लघन कर जाऊँ निश्चय !
तब तूने ही उसकी हत्या की है ?
अब से तेरी गणना हो न मनुष्यो मे सच !
मेरे हित कह, एक बार तो सच कह दे तू !
क्या तूने जगते मे उसको देखा था तब ?
या तूने सोते मे उसकी हत्या की है ?
आह सर्प क्या इतना काम न कर सकता था !
पर जघन्य ओ नाग ! सर्प दो जिह्वा वाला
तेरे समुख क्या है ? तू है विप का निर्झर !

डेमेट्रियस — अरे व्यर्थ ही मुझ पर क्यो हो दोप लगाती !
मै लाइसैन्डर की हत्या का अपराधी हूँ नही कभी भी !
कह सकता हूँ केवल इतना, मरा नही है वह निश्चय ही !

हर्मिया — विनती करती हूँ बतला दो ! सकुशल है वह ?

डेमेट्रियस — बतला देता, पर उससे क्या मुझे मिलेगा ?

हर्मिया — एक विशेप मिलेगा वह अधिकार तुझे भी,
फिर न देख पायेगा मुझको,
तेरी घृणित उपस्थिति से मै बच जाऊँगी,
वह जीवित हो या मृत हो पर मुझसे तू तो
कभी न मिलना।

[प्रस्थान]

डेमेट्रियस — ऐसे भीपण क्रोधग्रस्त क्षण मे इससे मिल
क्या पाऊँगा,
यही रुकूं इसलिये तनिक मै।
आह दु ख का भार और भी बोझिल बनता,

दिवालिया निंदियाँ कर्जे मे दुख के डूबी,
उसे चुका दूं ! हाय थक गया हूँ मै कितना !
रुक जाऊँ मै यही श्रांत हो गया हाय मै ।
[लेटता है, सो जाता है ।]

ओबेरोन — यह तूने क्या कर डाला पक ! तूने तो यह
बडी भूल कर डाली ! जा कर डाला तू ने
सच्चे प्रेमी की आँखो में मधु-सुकुसम ।
तेरी इसी भूल के कारण सच्चा प्रेम बिगडने को है,
और नही होगा सच्चा अब झूंठा भी तो वह ।

पक — भाग्य ! भाग्य शासन करता है,
एक मनुज है सत्य धारता,
लाखो झूंठी शपथें खा कर हारा करते ।

ओबेरोन — वायु वेग से जा कानन मे
तू एथेन्स की हेलेना को ढूंढ तुरत ही,
वह दुखियारी, पाण्डु पड गई, प्रेमोच्छ्वासो
मे यौवन का रूप खो रही ।
किसी तरह भ्रम फैला कर तू उसे यहाँ ला,
मै इसकी आँखो पर अब जादू करता हूँ
खुले नयन तब वह आ जाये समुख इसके ।

पक — जाता हूँ, जाता हूँ, देखो अब जाता हूँ,
मै तातार-धनुष से छूटे द्रुतगति शर सा
चला पवन पर, त्वरित चपल चल चरण चला यो ।
[प्रस्थान]

ओबेरोन — यह बैंगनी रग का फूल
मन्मथ-शर से आहत फूल,

इसे नयनतारा मे इसकी
मैं निचोड दूँ, जगे प्रीत ही
जब देखे यह प्रेयसि अपनी,
लगे इसे वह रूपसि सजनी !
जैसे शुक्र व्योम मे दिखता
उज्ज्वल निर्मल चमचम करता।
जय हो उसकी सुन्दरता की,
अरे पुरुष ! खुल नयन तुम्हारे
करे याचना उससे झुककर
मधुर प्रेम की हर्ष, जगा रे !

[पक का पुन प्रवेश]

पक — ओ जय ! परिस्तान के राजा,
हेलेना यह रही आ गई,
और युवक वह जिसको मैंने
पहले डेमेट्रियस समझा था
उससे प्रेम याचना करता।
देखेंगे यह नयी दिल्लगी ?
हे प्रभु ! कैसे मूर्ख लोग है
मर्त्य भला यह !

ओबेरोन — अरे उधर हट !
उनका कोलाहल डेमेट्रियस
की निद्रा को भग करेगा !

पक — तब ये दोनो पुरुष करेंगे
उसी एक स्त्री मे सहसा ही प्रेम याचना,
वह क्या नहीं होगी दिल्लगी नयी ही ?

वह जो सकट अद्भुत बनकर सहसा छाते
मुझमे वे ही अधिकाधिक आनन्द जगाते।

[लाइसैन्डर और हेलेना का प्रवेश]

लाइसैन्डर भला सोचती क्यो हो मै सच
तिरस्कार से प्रेम याचना करता हूँ यह।
घृणा कभी आती अश्रुओ मे हे सुदरि!
देखो जब मै शपथ ग्रहण करता हूँ आँसू बह आते है,
शपथो का जब जन्म आसुओ मे हो बाले!
उसे असत्य न समझो जग में।
यह सब तुमको मुझमे क्यो है घृणा दीखता,
श्रद्धा स्नेह फहरते आगे, कैसे दूँ प्रमाण मै इसको
सत्य बना दूँ?

हेलेना अरे तुम्हारी चालाकी बढती जाती है,
सत्य सत्य का जब करता है हनन! अरे यह
है शैतानो की पवित्रता की छलना ही!
यह है वही शपथ जो की थी तुमने पहले
सुघर हर्मिया से, क्या तुम उसको त्यागोगे?
एक ओर जो मुझसे की है और कर चुके जो तुम
पहले सुघर हर्मिया से लाइसैन्डर!
इन शपथो को एक तुला के दो पलडो पर
रख कर यदि तोला जायेगा,
तो दोनो का भार एक सा होगा केवल कहानियो सा,
हलका फुल्का, जिसमे कोई सत्य नही होगा,
न भार ही!

लाइसैन्डर मुझे नही था ज्ञान तनिक जब

उससे कभी प्रतिज्ञा की थी।

हेलेना — मुझको लगता, वही हाल है अब भी जब तुम
त्याग रहे हो उसे अचानक।

लाइसैन्डर — डेमेट्रियस प्यार करता है उसको देखो,
और प्यार करता न तुम्हे वह!

डेमेट्रियस — (जाग कर) आह हेलेना! देवि! अप्सरे!
दिव्य ज्योति! कितनी सुदरि हो तुम तिलोत्तमा!
प्रेयसि! किस से तुलना करूँ तुम्हारे इन सुदर
नयनो की?
स्फटिक कहाँ है इतना निर्मल!
यह दाडिम दशना छवि कैसी भव्य उजागर!
इन अधरो की सुघर लालिमा अकथनीय है,
सलज हिमानी सा कर कितना श्वेत पूत है,
प्राची के मृदु मद मलय सा कपित करती!
गरिमा के इस मधुर कोप! इस दुग्ध धवल से
घनीभूत सौंदर्य अमल को
मुझे चूम लेने दो क्षण भर!
राजकुमारी हो तुम रूपसि! सकल स्त्रियो मे!

हेलेना — हे दुर्भाग्य! नरक! लगता है तुम सब मिल कर
मुझसे यह अति क्रूर कठिन उपहास कर रहे!
मै हूँ बनी तुम्हारे हँसने को अब कोई केन्द्र बिंदु हूँ?
यदि तुममे कुछ भी दाक्षिण्य दया है बाकी
तो क्या ऐसे मुझे कचोट छेडते तुम सब?
क्या मै नही जानती मुझमे घृणा तुम्हे है?
क्या तुमको कुछ मिल जाता है मुझे छेडकर?

दिखते हो तुम पुरुष, पुरुष यदि तुम हो सचमुच
तो क्या एक विनम्र नारि से ऐसा दुर्व्यवहार
तुम्हे कुछ फवता है सच ?
शपथ खा रहे, और प्रतिज्ञाएँ करते हो,
अग-अग की स्तुति करते हो मेरे तुम यो,
जवकि ज्ञात है मुझे, घृणा मुझसे करते हो ?
तुम दोनो हो प्रतिद्वन्द्वी ही और हर्मिया
मे करते हो प्रेम और अब दोनो मिल कर
प्रतिद्वन्द्वी वन गये हेलेना के पीछे ही ?
उसका ही उपहास कर रहे ?
इस दीना अवला कुमारि की आँखो मे आँसू
भरना क्या
पौरुष है या कोई बडा काम है वोलो ?
और घृणा से चालित हो कर ऐसा करते ?
कोई भी कुलीन वाला इससे भी
अधिक और किससे दु ख पाये ?
इस व्याकुलपन के धीरज को इतना तो मत
हाय सताओ !
अरे तुम्हारा खेल हमारी मौत वन गया !

लाइसैन्डर डेमेट्रियस ! क्रूर हो निश्चय ! रहो न ऐसे !
तुम्हे हर्मिया से है प्रेम सत्य है यह तो ।
तुम्हे ज्ञात है और ज्ञात है यह मुझको भी !
अरे हर्मिया के प्रति अपना प्रेम छोड कर
आया हूँ मै सकल शक्ति से, पूरे मन से,
हेलेन मुझको दे दो, इसमे सचमुच मुझको

वहुत प्यार है और करूँगा
प्यार इसे मैं मृत्यु रेख तक ।

हेलेना — कभी निठुर उपहास न ऐसा हुआ कही भी ।

डेमेट्रियस — लाइसैन्डर ! हर्मिया तुम्हारी रहे, मुझे तो
नही चाहिये ।
कभी प्यार यदि मैंने उसको किया, किया
होगा क्या जाने ?
वह तो सब अब दूर हो गया ।
एक अतिथि की भाँति हृदय यह उसे त्याग
आया है मेरा ।
हेलेना घर है, मन मेरा घर लौटा है,
यही रहेगा, सचमुच अब वह घर आया है ।

लाइसैन्डर — हेलेना ! विश्वास न करना ।

डेमेट्रियस — वह विश्वास गिराओ मत तुम
नही जानते जिसको देखो !
अपने सकट को पहँचानो ! इसका मूल्य वहुत
मँहगा होगा यह जानो !
लो प्रेयसि आ गई तुम्हारी ! आई देखो !

[हर्मिया का पुन. प्रवेश]

हर्मिया — कैसी अँधियारी छाई है, गहन रात है,
ज्यो पुतली की स्याही बाहर फैल गई है,
जरा ज़रा सी आहट पाकर चौकन्नी होती हूँ सहमा,
नही दिखाई देता कुछ भी भिल्ली सी तिमिरा छाई है,
कानो मे प्रतिध्वनि करता है धीमा स्वर भी
जैसे नयनो के अभाव का मोल चुकाना अवकार है ।

लाइसैन्डर ! ये मेरे नयन न तुम्हे खोज पाये
कितना चल !
वलिहारी इन कानो की जो स्वर सुन कर ही
मुझे खीच लाये इस पथ मे ।
पर किस निष्ठुरता के वश हो
तुमने मुझको ऐसे छोडा ?

लाइसैन्डर — उसे रोकता कौन जिसे उठ चल पडने को
प्रेम विवश करता था क्षण-क्षण !

हर्मिया — वह कैसा था प्रेम भला जो लाइसैन्डर को
हाय ले गया मुझसे यो वियुक्त कर ऐसे ?

लाइसैन्डर — लाइसैन्डर का प्रेम नही रुकने देता था
उसके मन को
सुदरि हेलेना के प्रति जो आकर्षण था
उसने तो वन व्यापक मुझको घेर लिया यो ।
तू क्यो मुझको ढूँढ रही है ? क्या इतना भी समझ न
पाई,
तेरे प्रति जो घृणा जगी है मेरे मन में
वही मुझे लाई है तुझसे दूर खीचकर ?

हर्मिया — क्या कहते हो ? लगता है तुम नही वोलते !
अरे असम्भव सा लगता है ।

हेलेना — आह ! अरे तू भी है इस षडयत्र क्रूर मे
मिली हुई ही ! तीनो मिल कर एक हो गये,
मुझसे ऐसा निर्दय खेल खेलने धिक् धिक्
जव कि जानते हो मै कितनी दुखयारी हूँ ।
ओ घातक हर्मिया ! न कर ऐसा प्रहार तू !

ओ कृतघ्नतम नारी ! क्या तू मिली हुई है
इन दोनो से इस कठोर छल मे मुझको ऐसे
वहलाने ?
क्या हम दोनो की ये बाते उन घडियो की
जो न बीतने की आती थी, बहनापे की वे सौगधे,
हाय अलग करने वाले जब क्रूर समय को हम दोनो
गाली देती थी,
वह सब कुछ तू भूल चुकी है ?
बचपन के मासूम खेल, पढने के दिन की घनी मिताई,
वह भी री था स्नेह, हर्मिया !
हम तुमने दो कृत्रिम विधना बन कर मिल कर
काढा था न कुसुम एक ही ?
सग खेल, उठना सँग सग था,
एक गीत गाती थी हम तुम एक वाद्य पर
जैसे हाथ, बुद्धि, औ' सारे अग हमारे एक हो गये थे
मिल मिल कर,
ऐसे सँग सँग बढी अरे हम, एक कुसुम की
दो पखुडियाँ, अलग-अलग लगती थी, फिर भी
एक एक थी !
एक वृन्त पर दो कलियाँ थी मानो हम तुम।
योद्धा के उस कवच पर लगे राज चिन्ह सी
पूरक थी हम !
और हमारा इतने दिन का प्यार आज तुम हो
बिखेरती ?
मै हूँ हाय सहेली जिसके ही निन्द्र तुम

मिली हुई हो इन पुरुषो से ?
यह क्या है मित्रता ? नही है यह नार्य्योचित
मै करती निंदा हूँ इसकी, सारी अबला यही करेंगी !
भले आज मै हाय अकेली दु ख पा रही।

हर्मिया — कैसा यह आवेश मुझे विस्मय होता है,
मै तो तुमसे घृणा न करती, किंतु तुम्हारे
शब्दो मे मेरे प्रति क्यो है घृणा उमडती ?

हेलेना — कहो नही क्या अपमानित करने को तुमने
लाइसैन्डर को भेजा है यो मेरे पीछे,
जो वह मेरे वदन नयन की स्तुति करता है ?
और तुम्हारा
डेमेट्रियस दूसरा-प्रेमी
जिसने अभी कुछ समय पूर्व किया मुझको अपमानित
कुचला था मेरे मन को जिसने पाँवो से,
अब देवी, अप्सरा, दिव्य, बहुमूल्य, व्योम की
ज्योति कह रहा है मुझको क्यो ?
जिसमे उसको घृणा उसी से ऐसी बाते ?
क्यो लाइसैन्डर प्रेम तुम्हारा ठुकराता है ?
उसके भीतर कितना था वह सिंधु सदृश जो।
मुझसे स्नेह, प्रेम अकुलाहट दिखा रहा है
क्योकि तुम्ही ने भेजा औ' सम्मति दी अपनी ?
क्या है यदि सुदरी नही मै हूँ तुम जैसी
तुम सा आकर्षण सम्मान न पाया मैने,
भाग्य नही यदि, प्रेम न पाया, तो भी क्या है ?
पर अकाक्ष्य को प्रेम ! ! हाय दारुण है पीडा !

घृणा नही इस पर तो तुमको करुणा सजनी
करना उचित लगेगा निश्चय।

हर्मिया — नही समझती मै तो तुम यह सब क्या मुझसे
कहती हो ऐसे यो लच्छे से उलझा कर।

हेलेना — अच्छा! और बना लो तुम गभीर वदन को!
मेरी फिरते पीठ बनाओगी मुँह अपना ?
एक दूसरे को मिचका कर आँख, खेल को जारी रखना,
यह उपहास अगर पूरा उतार लोगी तुम
लिखा जायेगा ? इसके तो फिर वर्णन होगे ?
यदि तुममे कुछ दया, हया या ध्यान शेष है,
क्या मुझसे ऐसी निर्दयता कभी उचित है ?
किंतु विदा! कुछ सीमा तक तो स्वयं दोष है
मेरा ही यह,
मृत्यु, समाप्ति शीघ्र इसका निदान कर देगे।

लाइसैन्डर — रुको प्रिये हेलेना, मेरी बात सुनो तो,
मेरी प्रेयसि, मेरा जीवन, आत्मा मेरी
सुदरि अप्सरि ओ हेलेना!

हेलेना — अहा! धन्य है! क्या कहना है!

हर्मिया — प्रिय! उसका ऐसा अपमान करो मत तुम यो!

डेमेट्रियस — यदि यह समझा सकती नही, करूँगा तब मै
विवश अभी तो इसको।

लाइसैन्डर — यह हर्मिया मुझे क्या समझायेगा सुन तू!
डेमेट्रियस! मुझे क्या विवश करेगा रे तू!
इसकी दीन विनतियो मे वह शक्ति कहा है ?
तेरी धमकी मे तो उतनी भी न शक्ति है!

हेलेना ! मै तुम्हे प्यार करता हूँ, अपने
जीवन की सौगध ! चाहता हूँ मै तुमको।
जो तुम कहो उसी की शपथ आज खाऊँगा
जो यह कहे कि तुमसे मुझको प्यार नही है
उसे प्रमाणित करने को झूँठा मै बोलो !

डेमेट्रियस मै कहता हूँ इससे कही अधिक करता हूँ
प्यार तुम्हे मै !

लाइसैन्डर यदि कहते ही हो तो आओ हम कर लेवे
शक्ति परीक्षण, करे प्रमाणित ! साहस है न ?

डेमेट्रियस मै तो आतुर हूँ लो आओ !

हर्मिया लाइसैन्डर ! इस सबका जा कर अंत कहाँ है ?

लाइसैन्डर दूर दूर हो अरी कलमुँही !

डेमेट्रियस नही नही श्रीमान् ! समझ कर !
ऐसे मत कूदो उलाँघ कर ! अपनी चाल चलो हाँ,
अब भी पडो न सन्मुख ! जाओ जाओ !
क्या लोगे तुम ! नाजुक हो पालतू आदमी !

लाइसैन्डर जा जा कुत्ते ओ विलाव तू ! नीच !
हट जा पीछे, वर्ना पूँछ पकड झटकूँगा तुझे
साँप सा।

हर्मिया कैसा परिवर्त्तन है ? तुम हो गये अचानक
कैसे यो असभ्य ? हे प्रियतम

लाइसैन्डर तेरा प्रियतम ! ओ बौनी तातारिन ! जा जा !
घृणित, मूढ तू ? कडवी दवा कसैली ! चल हट !

हर्मिया क्या तुम यह दिल्लगी कर रहे ?

हेलेना हाँ यह सच है और कर रही हो तुम भी तो !

लाइसैन्डर डेमेट्रियस ! वचन निभाऊँगा मै अपना तुझसे सुन ले !

डेमेट्रियस तुम्हे किसी के बधन ने बाँधा है कोमल !
नही तुम्हारे शब्दो का विश्वास करूँगा !

लाइसैन्डर किसकी कहते हो बधन कह ! यही हर्मिया !
क्या मै इसको मारूँ और हटा दूँ पथ से ?
करता इससे घृणा किंतु मै, फिर भी नही मार पाऊँगा ।

हर्मिया आह ! और क्या मरण भला है मेरा बोलो
और बडा है कहो घृणा से क्या जो काटे ?
घृणा ! अरे मुझसे ! फिर भी क्यो ?
क्या तुम नही वही लाइसैन्डर ?
क्या हूँ नही हर्मिया भी मै वही बताओ !
वैसी ही सुदर हूँ अब भी जैसी थी मै क्षण भर पहले ।
अरे रात मे ही तो तुमने प्रेम किया है,
और रात मे ही तुमने छोडा है मुझको ?
क्यो ? क्यो छोडा मुझे ! अहे देवता गगन के देखो
देखो !
क्या है इस सबका रहस्य ? मुझसे कह तो दो !

लाइसैन्डर जीवन की सौगध ! और मै नही देखना
तुझे चाहता अब क्षण भर भी ।
आशा की रेखा के बाहर हो जा अब तू !
सदेहो, शकाओ, प्रश्नो आदिक की परिधियाँ सकल तू
उल्लघित कर, निश्चय कर ले, और अधिक
कोई न सत्य है, नही कठिन उपहास समझना अपने
मन मे
कि मै घृणा करता हूँ तुझसे,

और प्यार करता हूँ मै प्यारी हेलेन को ।

हर्मिया — ओ छलिया ! ओ जादूगरनी । कुसुम कीट तू ।
और प्रेम की चोर । कहाँ से आई निशि में
मेरे प्रिय का हृदय ले गई मुझसे ही तू
ओ मायाविनि । छीन हाय कैसे बतला तो ।

हेलेना — वाह । खूब यह रही । नही क्या तुझमे बाकी
नारी की लज्जा, कुमारिका का सकोच हर्मिया ।
कह तो ?
क्या उठ गयी सहज तेरी व्रीडा भी सहसा ।
क्या तू मेरी मधुर विनम्र जीभ से भी सच
चाह रही है उत्तर कडवे और चुभीले ।
ओ धिक्कार । तुझे धिक् धिक् है,
अरी नकलचिन । ओ कठपुतली ।

हर्मिया — कठपुतली मै । क्यो ? अच्छा तो यो है तेरा
खेल, देखती हूँ क्या तेरी चाल भला है ।
हम दोनो की ऊँचाई की तुलना करके
तूने अपनी लम्बाई को दिखलाया है ।
अपने लवे तन का तूने यह प्रभाव इन पर डाला है ?
पर इस ऊँचाई के कारण क्या तू इसके
मन मे इतनी ऊँची होकर बैठ गई है ?
क्या मै बौनी हूँ इतनी, इतनी नीची हूँ ?
क्यो हूँ नीची मै, कह ओ तू
कुसुम-सुसज्जित लवे डडे ।
मै नीची हूं ? इतनी नीची कभी मै नही सुन ले लबू !
मेरे नख जो तेरे नयनो तक न पहुँच पायें सुनती है ?

हेलेना हे सज्जनगण ! यदपि आप उपहास कर रहे हैं
मेरा, पर
ऐसा होने न दें, एक विनती है मेरी !
यह आघात नही कर पाये मेरे ऊपर !
मैं ऐसी अभिशप्त नही थी, मार पीट मे
ऐसी कुशल नही हूँ मै सचं।
मै स्त्री हूँ भीरु सहज ही, इसको रोके,
मार नही पाये यह मुझको ! आप समझते
होगे इसको नीचा मुझसे, पर न समझिये
कि मै कर सकूँगी इसकी कोई बराबरी।

हर्मिया नीचा ! फिर कहती हे ! सुन लो !

हेलेना भली हर्मिया ! इतनी कटु मत हो तू मुझसे !
मैं तो तुझे प्यार करती थी सदा हर्मिया !
तुझसे लेती थी सलाह, नुकसान कभी तेरा न किया है,
डेमेट्रियस का प्रेम—एक यह विषय छोड दें।
सो भी इसको प्रिय समझा था, प्रेम प्राप्त करने को
इसका
बता दिया मैने इसको कि पलायन होगा
आज तुम्हारा सघन विपिन मे।
इसने पीछा किया और हाँ ! प्रेम हेतु ही
मैने इसका;
इसने मुझको डाँटा है, धमकाया भी है
मुझे पीट देगा, उफ कितना तिरस्कार है
इसने मेरा किया, मृत्यु का भय दिखलाया,
जाने दो मुझको छोडो अब बहुत हो गया,

में एथेन्स चली जाऊँगी ढोती अपनी महामूर्खता,
अब न करूँगी कोई पीछा, जाने दो मुझको हे सखि
तुम ।
देखो मै कितनी भोली हूँ, कितना प्यार भरा है
मुझमे ।।

हर्मिया . चल चल जा जा ! तुझे रोकता कौन यहाँ पर ?

हेलेना मूर्ख हृदय, जो मै पीछे छोडे जाती हूँ ।

हर्मिया अरे साथ क्या लाइसैन्डर के ?

हेलेना डेमेट्रियस के !

लाइसैन्डर हेलेना ! मत डर, कुछ कर सकती है तेरा
किंतु नही यह ।

डेमेट्रियस अरे भले ही लो तुम भी हर्मिया पक्ष ही,
पर मेरे रहते वह कुछ भी कर न सकेगी !

हेलेना अरे नही । जब यह होती है क्रुद्ध, बहुत
चालाक कुटिल हो जाती है यह ।
बडी कर्कशा थी यह आई थी पढने को सग हमारे
शाला मे मैं सच कहती हूँ ।
है तो छोटी ! नीचा मत कहना, है यह वैसे
बडी भयानक !

हर्मिया छोटी ! नीचा ! और कुछ नही । छोटी ! नीची !
कब तक तुम करवाओगे अपमान और यह
क्रूर ठिठोली मेरी बोलो !
हट जाओ तुम ! जरा देख ही लूँ इसको मै ।

लाइसैन्डर चल हट बौनी ! भाग तिनकनी !
बँटी घास-से-गाँठ गठीली !

बीज जरा सी जड की उलझन,
मनका सी है चली अकडती ।

डेमेट्रियस माने ना माने मेहमान बनूंगा मैं तो !
क्या जोरो से बोल रहे हो और तरफदारी
भी किसकी ?
जो कि घृणा करती है तुमको !
जाओ ! जाओ ! इसे अकेली ही रहने दो !
हेलेना की बात न करना, पक्ष न लेना कह देता हूँ ।
अगर जरा भी प्यार दिखाया उसको तुमने,
तो लो समझ कि तुमको उसका मोल चुकाना
होगा, समझे ?

लाइसैन्डर अब वह नही रोकती मुझको,
आ जा अब तू हिम्मत हो, तो
देखे किसका है अधिकार आज हम देखे,
तेरा है या, है यह मेरा,
हेलेना है देखे किसकी !

डेमेट्रियस तो फिर आ जा ! चल देखेगे !
संग चलूंगा तेरे, देखूं तेरा साहस !
[लाइसैन्डर और डेमेट्रियस का प्रस्थान]

हर्मिया देखा अरी छबीली तूने, तेरे कारण
यह संकट है । नही, न जा अब उनके पीछे ।

हेलेना मैं तुम पर विश्वास नही कर सकती कोई ।
तेरे इस मनहूस संग मे नही रहूँगी ।
झगड़े को तो तेरे हाथ उबलते रहते,
मैं तेरी बराबरी क्यो कर कर सकती हूँ ?

पर लवे है पाँव अरी मेरे तो
मुझे भागने से तू रोक नही पायेगी।
[प्रस्थान]

हर्मिया · उफ ! क्या आश्चर्य्य ! करूँ क्या !
किंकर्त्तव्य विमूढ हो गई मै तो यो ही।
[प्रस्थान]

ओबेरोन यह तेरी लापरवाही है। या गलती है,
या तू जान बूझ कर करता
है ऐसी शैतानी ! क्यो पक !

पक ओ छायाओ के राजा ! विश्वास करे, सच,
क्या न आपने कहा कि मै एथेन्स नगर के
वस्त्रो को निहार कर ही पहँचानूं नर को ?
मेरा क्या अपराध भला इसमे है देखे ?
मैंने तो एथेन्स निवासी के नयनो मे मधु आँजा है,
इनका झगडा वैसे ही तो, मुझे एक आनद हो गया !

ओबेरोन देख रहा है ? गये हुए है प्रेमी दोनो
द्वन्द्वयुद्ध के लिये ढूंढने जगह इस समय।
रोबिन ! कर शीघ्रता रात को गहरा कर दे !
सघन कुहर से यह तारिल चँदवा तू ढँक दे,
जिसमे से कुछ दीख न पाये, अचेरोन सा,
यो भटकाता चल तू इन दोनो को आगे,
ऐसे जो ये निकट न आये एक दूसरे के अव पथ में।
कभी बोल तू लाइसैन्डर सा, और कभी तू
डेमेट्रियस सदृश कटुवचन सुना फिर सहसा,
यो दोनो को खूब-खूब भडका तो लेकिन

वीज जरा सी जड की उलझन,
मनका सी है चली अकडती।

डेमेट्रियस — माने ना माने मेहमान बनूंगा मै तो !
क्या जोरो से वोल रहे हो और तरफदारी
भी किसकी ?
जो कि घृणा करती है तुमको !
जाओ ! जाओ ! इसे अकेली ही रहने दो !
हेलेना की वात न करना, पक्ष न लेना कह देता हूँ।
अगर जरा भी प्यार दिखाया उसको तुमने,
तो लो समझ कि तुमको उसका मोल चुकाना
होगा, समझे ?

लाइसैन्डर — अव वह नही रोकती मुझको,
आ जा अव तू हिम्मत हो, तो
देखे किसका है अधिकार आज हम देखे,
तेरा है या, है यह मेरा,
हेलेना है देखे किसकी !

डेमेट्रियस : तो फिर आ जा ! चल देखेगे !
सग चलूंगा तेरे, देखूं तेरा साहस !
[लाइसैन्डर और डेमेट्रियस का प्रस्थान]

हर्मिया — देखा अरी छवीली तूने, तेरे कारण
यह सकट है। नही, न जा अव उनके पीछे।

हेलेना — मै तुम पर विश्वास नही कर सकती कोई।
तेरे इस मनहूस सग मे नही रहूँगी।
झगडे को तो तेरे हाथ उवलते रहते,
मै तेरी वरावरी क्यो कर कर सकती हूँ ?

पर लवे है पाँव अरी मेरे तो
मुझे भागने से तू रोक नही पायेगी।

[प्रस्थान]

हर्मिया
उफ ! क्या आश्चर्य्य ! करूँ क्या !
किंकर्त्तव्य विमूढ हो गई मै तो यो ही।

[प्रस्थान]

ओवेरोन
यह तेरी लापरवाही है। या गलती है,
या तू जान बूझ कर करता
है ऐसी शैतानी ! क्यो पक !

पक
ओ छायाओ के राजा ! विश्वास करे, सच,
क्या न आपने कहा कि मै एथेन्स नगर के
वस्त्रो को निहार कर ही पहँचानूं नर को ?
मेरा क्या अपराध भला इसमे है देखे ?
मैने तो एथेन्स निवासी के नयनो मे मधु आँजा है,
इनका झगडा वैसे ही तो, मुझे एक आनद हो गया !

ओवेरोन
देख रहा है ? गये हुए है प्रेमी दोनो
द्वन्द्वयुद्ध के लिये ढूंढने जगह इस समय।
रोविन ! कर शीघ्रता रात को गहरा कर दे !
सघन कुहर से यह तारिल चँदवा तू ढँक दे,
जिसमे से कुछ दीख न पाये, अचेरोन सा,
यो भटकाता चल तू इन दोनो को आगे,
ऐसे जो ये निकट न आयें एक दूसरे के अब पथ मे।
कभी वोल तू लाइसैन्डर सा, और कभी तू
डेमेट्रियस सदृश कटुवचन सुना फिर सहसा,
यो दोनो को खूब-खूब भडका तो लेकिन

पास न आने दे दोनो को ।
और अंत मे अरे नशीली निंदिया आ घेरे दोनो को
बनी मौत सी सर्वग्राहिणी,
सीसे जैसे भारी बनके पग हो जायें चलते चलते,
गादुर जैसे पंख नींद फैला कर ढाँके इनको धीरे ।
तब यह रस लाइसैन्डर के नयनो मे पक ! तू
अरे डाल देना, इसमे गुण यह मनहर है
सारी भूलो को सुधारता है यह क्षण मे,
और सुला देता है गहरी सी निद्रा मे,
जब जगता है व्यक्ति, उसे यह सकल ठिठोली
एक स्वप्न सी, व्यर्थ और फलहीन कल्पना सी
लगती है ।
फिर एथेन्स जायेगे प्रेमी, इनका सुंदर
मिलन मृत्यु तक फिर न वियोग कभी झेलेगा ।
तू जब तक यह सब करता है,
मै जाता हूँ अपनी रानी के समीप औ'
माँगू उससे यही इडियन बालक जा कर,
फिर उसकी आँखो से जादू दूर करूँगा,
फिर वह दैत्य न उसको प्रिय सा लग पायेगा,
होगी चारो ओर शांति फिर ।

पक परियो के राजा, यह सब जल्दी होना है,
क्योंकि अजदहे-त्वरगति निशि के
मेघो को अब काट रहे है जल्दी-जल्दी,
ऊषा का हरकारा देखो उभक रहा है,
जिसके आते ही पिशाच जो रातो मे है घूमा करते

कब्रिस्तानों में जाते हैं लौट ! और वे
आत्माएँ अभिशप्त चतुष्पथ या बाढ़ों की
वेला में जो गड़ी अनगड़ी रहीं, चली भी
गई मौन अपनी शैय्याओं पर सोने को
जिन पर रेंगा करते कीड़े,
क्योंकि लाज आती है उनको
कहीं न दिन आ देखे उनके वास स्थान को,
वे तो स्वतः ज्योति से निर्वासित रहते हैं,
उन्हें स्याह भौंहों वाली यह रात भयानक
ही भाती है सदा अँधेरी !

ओबेरोन हम तो किंतु आत्माएँ हैं कुछ और किस्म की।
मैंने तो ऊषा से कितनी बार न जाने क्रीड़ा की है !
मैं वन प्रांतर वासी जैसा, कुन्जों में चलता रहता हूँ
जब कि पूर्व का सिंहद्वार है रक्तिम होता लाल दीप्त सा,
नेप्च्यून पर वरदायिनि किरणें खुलती हैं,
वे उसके हरिताभ सुनिर्झर ताल स्वर्ण से बन जाते हैं,
फिर भी जल्दी ही अच्छी है, देर करो मत,
दिन के आने के पहले ही पूर्ण करो यह
सकल कार्य तुम !

[प्रस्थान]

पक ऊपर नीचे, ऊपर नीचे,
उन्हें चलाऊँ आगे पीछे !
गाँव खेत में मैं हौआ हूँ,
भटका दूँ अब उनको पीछे !
यह आया लो एक !

[लाइसैन्डर का पुन प्रवेश]

लाइसैन्डर कहाँ ? कहाँ है ओ गर्वीले !
डेमेट्रियस ! बोल, चुप क्यो है ?

पक अरे नीच ! आ जा । मै कब से राह देखता
खड्ग खीच कर, किधर छिपा है ?

लाइसैन्डर यह ले आया, सीधा तुझ पर

पक आ जा जल्दी ! इधर चला आ यहाँ भूमि है
समतल आ जा

[लाइसैन्डर का आवाज का पीछा करते हुए प्रस्थान
डेमेट्रियस का पुन प्रवेश]

डेमेट्रियस लाइसैन्डर ! क्यो नही बोलता ! ओ कायर तू
भाग गया है ? अरे भगोडे ! बोल छिपा है
किस झाडी मे ? कहाँ छिपाये है अपना सिर ?

पक ओ कायर, बढ-बढ कर तारो को न छेड तू,
ओ बकबकिये !
कहाँ झाडियो से कहता है आओ लडने !
अरे इधर आ इधर ? निकरा मैदान देख तू !
आ जा बच्चे ! अरे दुधमुँहे ! नन्हे मुन्ने !
सटी मार ठीक कर दूंगा ! उसको है धिक्कार उठाये
जो तलवार अरे तेरे हित !

डेमेट्रियस अच्छा तू है वहाँ ?

पक आ जा मेरे स्वर को सुनता ! यहाँ नही, पर्दो
का तो फिर
खेल खुले मे होगा आ जा ।

[प्रस्थान]

[लाइसैन्डर का पुन प्रवेश]

लाइसैन्डर — अरे जा रहा आगे-आगे, और मुझे ललकार रहा है,
जब पुकार सुन कर आता हूँ गायब होता,
अधम, बहुत चलना है जल्दी यह मुझसे तो !
कितनी जल्दी चला किंतु यह कही अधिक ही
जल्दी भागा।
भटक गया हूँ ऊबड खाबड अँधियारे मे कर लूं
मैं विश्राम यहाँ पर।

[लेटता है।]

अरे दिवस ! आलोकित आ जा !
एक बार यदि तू दिखला देगा अपना मुख,
डेमेट्रियस नीच को क्षण भर मे ढूंढूंगा
और निकालूंगा मै उससे अपना बदला।

[सोता है। पक और डेमेट्रियस का पुन प्रवेश]

पक — हो हो हो ! कायर ! क्यो आता नही बता तू !

डेमेट्रियस — हिम्मत हो तो आ जा। लेकिन
भागा जाता है तू तब मे ! आगे आगे ! जगह बदलता,
क्यो न ठहरता, आ आँखो से आँख मिला कर देख
जरा तू !
अरे कहाँ है ?

पक — अरे यहाँ हूँ ! इधर नही आता है क्यो तू ?

डेमेट्रियस — नही, खेल करता है मुझसे ?
दिन मे जब मुंह दर मुंह तुझसे देख मिलूंगा
मुलाकात वह मँहगी बेहद तुझे पडेगी।

अरे चला जा अपने रस्ते !
वहुत थका हूँ, कितनी शीतल है यह शैय्या !
क्यो न यहाँ लेटूं कुछ क्षण को !
सुबह ढूंढ लूंगा फिर उसको।

[लेटता है, सो जाता है। हेलेना का प्रवेश]

हेलेना अरी रात विश्रात ! अरी ओ दुखद व्यथा की
जननी, ओ अछोर निशि काली !
अरी घटा दे अपने तन को !
प्राची से वर्पण कर सुख का,
जाऊँ मै एथेन्स दिवस मे,
ऐसा सग छोड जाऊँ मै जिसमे सब ही
हाय घृणा करते है मुझसे !
ओ री निद्रा ! तू जो अवसादो की पलकें
कभी कभी मूंदा करती है,
मुझे दूर ले चल इस मेरे विकल विश्व से !

[लेटती है, सो जाती है।]

पक अभी तीन है ! आ एक और !
एक से दो दो, हो तव चार !
आ गई लो वह, शप्त उदास !
काम भी है वालक अविचार,
विचारी नारी का जो हृदय
विकल करता है पागल, सदय
वडा चचल है मन्मथ मीत,
खेल का खेल, प्रीत की प्रीत ?

[हर्मिया का पुन प्रवेश]

हर्मिया कभी न इतनी श्रात हुई मै,
कभी न इतनी व्यथा उमड घिर आई ऐसी,
ओस हाय अगो मे कैसी शिथिल उदासी भरती मेरे,
और झाडियो के काँटो मे पाँव छिप गये,
कैसे चलूं हाय मै कैसे सरकूं रेगूं
मन की होड नही कर पायेगे पग मेरे
आह यही मै रुक जाऊँ दिन के आने तक
हे भगवान ! अगर कोई हो युद्ध-द्वन्द्व तो
लाइसैन्डर की रक्षा करना

[लेटती है, सो जाती है।]

पक धरती पर है
सोये गहरी नीद,
तेरे नयनो को दूं आँज
मनहर प्रेमी ! ले मै सीच

[लाइसैन्डर की आंखों पर रस निचोडता है।]

जागेगा जव
खोल नयन
होगा तव सच्चा सुख प्राप्त
रूप चयन !
उसी प्रिया के नयनो मे !
गाँव गाँव मे है यह बोल,—
जगते मे, जो जाये दिखाई
वही चुने 'अपनी' कट, भाई !

जैक को जिल।
नही टिल मिल,
अपनी घोडी अपने पास,
फिर सब होगा ठीक।
सोये गहरी नीद।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[वही स्थान]

[लाइसैन्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और हर्मिया सो रहे हैं।]

[टिटानिया और वॉटम का प्रवेश। पीज़ब्लौसम, कौबवैब, मौथ, मस्टर्डसीड और अन्य परि सेवक-सेविकाएं साथ हैं। पीछे ओवेरोन है, अदृश्य।]

टिटानिया आओ बैठो प्रिय इस फूलो की शैय्या पर,
मै कपोल यह स्निग्ध तुम्हारे तनिक दुलारूँ,
इस चमकीले मधुर शीश पर प्राण तुम्हारे
लाओ यह गधित गुलाव मै इधर लगा दूं,
और तुम्हारे सुदर लवे इन कानो पर मुद्रित कर दूं
अपना चुवन,
ओ मेरे जीवन के चिर आनद सुभग हे !

वॉटम पीजव्लौसम कहाँ है ?

पीज़ब्लौसम यह हूँ तो मै।

वॉटम पीज़ब्लौसम, जरा मेरे सिर को खुजा दो। श्रीमान् कौववैव कहाँ है ?

कौववैव आज्ञा को प्रस्तुत हूँ कहिये।

वॉटम श्रीमान् कौवदैव ! अच्छे महोदय ! आप अपने शस्त्र हाथो में उठा ले और मेरे लिये लाल कमर की एक भाली मधुमक्खी को गोखरू के ऊपर मार डाले ! और श्रीमान् ! मेरे लिये शहद का

छत्ता ला दे। इस झंझट मे वहुत मेहनत न करिये श्रीमान् ! पर श्रीमान् ! इतना ध्यान रखियेगा कि कही छत्ता न टूट जाये। मै यह पसद नही करूँगा कि आप शहद के छत्ते के नीचे नहाकर चुचाते हुए लौट कर आये। महाशय मस्टर्डसीड कहाँ है ?

मस्टर्डसीड यहाँ देखिये, आज्ञा देवे।

वौटम महाशय मस्टर्डसीड ! मुझे अपना हाथ दे। अरे तकल्लुफ छोडिये आप भी !

मस्टर्डसीड कहिये क्या इच्छा है श्रीमान् !

वौटम कुछ नही श्रीमान्, मेरे अच्छे महाशय, वस जरा घुडसवार कौववैव को खुजाने मे मदद देनी है। मुझे नाई के यहाँ जाना चाहिये श्रीमान् ! मुझे लगता है मेरे चेहरे मे वहुत ज्यादा वाल उग आये है, और मै ऐसा नाजुक गधा हूँ कि जव मेरे वालो मे गुलगुली मचती है तो खुजाने की जरूरत पडती ही है।

टिटानिया आह प्राण ! क्या गीत सुनोगे तुम इस वेला ?

वौटम गाना सुनने का मै वडा शौकीन हूँ। सँडासी और हड्डियाँ जुटा लो !

टिटानिया प्रियतम, वोलो ! क्या कुछ खाने की इच्छा हे ?

वौटम सचमुच ! चारे का गट्ठर ! अरे मै सारी तुम्हारी सूखी जई यो ही चवा जाऊँगा। वैसे मुझे सूखी घास मिल जाये तो अच्छा रहे। अच्छी घास। मीठी घास। हे कही ? किसी के पास !

टिटानिया मेरी सेवा मे है परी एक ऐसी जो
साहसपूर्ण हृदय रखती है, उसे भेज कर अभी
गिलहरी के मगह से मँगवाती हूँ
प्राण तुम्हारे हेतु नये अखरोट मधुरतम !

वौटम मुझे तो मुट्ठी दो मुट्ठी सूखे मटर मिल जाये। पर मै प्रार्थना

करता हूँ, कोई मुझे हिलाना नही, मुझे नीद-सी आ रही है।

टिटानिया : सो लो प्रियतम ! मै अपने भुजबंधन मे
तुमको बाँधूंगी। जाओ परियो ! फैल जाओ
हर ओर, यहाँ एकान्त करो तुम।

[परियो का प्रस्थान]

ऐसे ही सुरभित वुडबाइन कलि अलवेली
गंध कुसुम प्रिय हनीसकिल का आलिंगन करता है
प्रियतम !
और सिरपेचे की लता ऐम तरु की उँगलियाँ
पकड झूमती।
आह प्रेम करती हूँ तुमसे कितना प्रिय मै,
मोहित हूँ मै तुम पर कितनी !

[वे सोते हैं।]

[पक का प्रवेश]

ओबेरोन (बढ कर) स्वागत प्रिय रोबिन ! क्या देख रहे हो
मधुर दृश्य यह ?
इसके उत्कट तीव्र प्रेम को देख मुझे करुणा आती है।
इस वनात मे इसी घृणित से महा मूर्ख से मिलनातुर थी
तभी इसे डाँटा था मैने, दूर कर दिया,
देखो इसने इसकी रोमिल कनपटियो को
कैसे नये सुगंधित फूलो से दुलार कर यहाँ सजाया !
वह नीहार, जो कि कलियो पर पीन सघन हो
प्राची का सा रत्न बना जगमग सा करता
इस छोटे से विकल फूल के नयन बीच में अश्रु बन गया,
क्योकि रो रहा है अपना अपमान सोच वह !

जब मैंने स्वेच्छा मे इसको छेड दिया था,
इसने नम्र वचन कह मुझसे कहा—'शात हो।'
तब मैंने वह बालक माँगा,
तुरत दे दिया इसने मुझको, और शीघ्र ही
परी भेज दी अपनी उसको परीदेश से ले आने को।
अब बालक पाया है मैंने,
अब यह इसका दृष्टिदोप अति घृणित दूर
कर दूं मै इससे।
प्रिय पक! इस एथेन्स के वासी के सिर से यह
नकली चेहरा करो दूर तुम
जब जागेगी परी देश की रानी तब फिर यह जब जागे
लौटे यह एथेन्स, भूल जाये सब
इस रजनी की घटना जैसे कोई भयद स्वप्न था।
पर पहले मै परियो की रानी को मुक्त करूँ वचन से।
हो जा, जैसी पहले थी तू।
देख वही जो दृष्टि योग्य हो!
शशि-कलिका का मदन-पुष्प पर
ऐसा है अधिकार, भोग्य ओ!
मेरी टिटानिया अब जागो, मेरी रानी,
मेरी प्रेयसि!

टिटानिया मेरे ओवेरोन! स्वप्न देखे मैंने क्या!
मुझे लग रहा जैसे किसी गधे पर मोहित हुई हाय मै!

ओवेरोन वह देखो प्रिय पात्र तुम्हारा! सोना तो है।

टिटानिया यह सब कैसे हुआ! घृणा होती है मुझको
इसका यह आनन निहार कर।

ओबेरोन रहो शान्त क्षण ! रोबिन ! इसका शीश बदल दो !
टिटानिया ! सगीत छेडने की आज्ञा दो !
पचेन्द्रिय की तन्मय निद्रा से भी गहरी
मरण सदृश विस्मृति जिससे निस्सृत हो स्वप्निल !

टिटानिया . छेडो छेडो ! गीत अरे ऐसा छेडो जो
इन्द्रजाल सा निद्रा मे आकर दुलरा दे !

[सगीत, स्तब्धता]

पक अब जब तुम जागो तो अपनी मूर्ख दृष्टि से ही
सब देखो !

ओबेरोन गाओ गाओ ! आओ मेरी रानी आओ
मेरा हाथ पकड कर त्यागो इस धरती को
जहाँ विनिद्रित है यह प्राणी ।
हम तुम फिर मिल गये आज है,
कल हम आधी रात प्रिये ! जब गहरायेगी
ड्यूक थीसियस के रमणीय भवन में सुख से
मगलमय जयमय नाचेंगे ।
रे भविष्य में आने वाली प्रिय संततियो
को आशीष मनोहर देंगे,
सग थीसियम के यह सच्चे प्रेमी दोनो
युगल हर्ष में पुलकित होगे ।

पक परिस्तान के राजा ! देखो, चला तिमिर अब
मोर-विहग का सुन पडता है मीठा कलरव ।

ओबेरोन मेरी रानी ! स्तब्ध उदासी दूर छोड दें
अब हम निशा तिमिर सा उसको त्यागे आओ
हम भूमण्डल की परिक्रमा कर सकते है

यायावर शशि से भी त्वर गति से, अब आओ

टिटानिया आओ स्वामी चले उड चले,
कैसे हुआ रात मे यह सब ?
इन मर्त्यो के साथ भूमि पर सोती कैसे
पाई गई कहो मै ऐसे ! क्या रहस्य नव !

[प्रस्थान]

[नेपथ्य में शृ गी नाद । थीसियस, हिप्पोलिटा, एजियस तथा सेवको का प्रवेश]

थीसियस जाओ कोई और बुला लाओ वनचर को ।
कार्य्य पूर्ण हो गया हमारा ।
लो दिन का आलोक लगा है छन-छन आने,
मेरी प्रिया शिकारी कुत्तो का सगीत, सुनेगी भीपण,
पश्चिम की घाटी मे गुजित, उन्हे छोड दो,
दौडा दो, कहता हूँ जल्दी, वनचर ढूंढो !

[एक सेवक का प्रस्थान]

सुदरि रानी ! हम गिरि शिखर वहाँ है, उस तक चले चलेगे
और वहाँ मे सगीतात्मक प्रतिध्वनियो को श्रवण करेगे,
कुत्तो का कठोर स्वर गूंजेगा वह कैसा !

हिप्पोलिटा एक वार मै सँग गई थी
हरक्युलीज, औ' कैडमैस के प्रिय !
जब स्पार्टा के भयद शिकारी कुत्तो से था
घेरा उनने भालू एक क्रीट के वन मे ।
वैसा हाँका नहीं सुना है मैंने अब तक ।
कुञ्जो मे, नभ मे, निर्भर मे, ठौर-ठौर मे
लगता था ज्यो एक, एक ही शोर उठ रहा,

लगता था प्रत्येक बोलता था चिल्लाता
उत्तर प्रत्युत्तर सा देता, ऐसा मधुर सुगर्जन,
ऐसा गीतात्मक लय मादक कोलाहल वह
फिर न सुन सकी।

थीसियस अरे शिकारी कुत्ते मेरे भी तो रानी
है स्पार्टा की उसी नस्ल के,
ऐसे है ये, लम्बे इनके कान लटकते ऐसे नीचे
झाडा करते है प्रभात की नयी ओस को।
मुडे हुए घुटने है इनके, और गले मे मास लटकता
थेसाली वृषभो सा इनके,
दौडा करते धीरे पीछे, किन्तु एक दूजे के पीछे लगे-
लगे ये
ऐसे चलते जैसे बजते है वे घटे!
ऐसी चिल्लाहट लयमय न सुनाई देगी,
श्रृ गी का निनाद भी उसको पकड न सकता।
थेसाली, स्पार्टा कि क्रीट, हाँ नही कही भी!
सुनकर स्वय जाँच लेना तुम!
ठहरो! धीरे! यहाँ कौन यह दैवी वन प्राणी सोते है!

एजियस महाराज! यह तो मेरी बेटी सोती है,
यह है लाइसैन्डर, डेमेट्रियस यह है, यह है हेलेना जो
वयोवृद्ध नेडर की दुहिता,
ताज्जुब है यह चारो साथ यहाँ कैसे है!

थीसियस निस्सदेह जगे है यह सब भिनसारे ही
आज ग्रीष्म ऋतु का त्योहार मनाने मिल कर,
और हमारा आयोजन सुन, ससम्मान आये है

अपना आदर करने।
किंतु एजियस! क्या न आज ही अरे हर्मिया को
अपना उत्तर देना है?
अपना निर्णय उसे आज ही तो कहना है?

एजियस हाँ श्रीमान्! आज ही है वह दिवस सुनिश्चय।

थीसियस : शिकारियो को आज्ञा दो वे शृ ग बजा कर
इन्हे जगा दे।

[नेपथ्य में शृ गी नाद और पुकारना। लाइसैन्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और हर्मिया जागते है और उठ जाते हैं।]

नमस्कार! अब सत दिवस का उत्सव बीता,
वन के पक्षी युगल लगे है होने क्या अब?

लाइसैन्डर क्षमा करे श्रीमत

थीसियस चलो हटो अब! अरे खडे हो,
मुझे ज्ञात है तुम दोनो प्रतिद्वन्द्वी प्रेमी,
फिर जग मे यह मधुर मिलन कैसे आया है?
अरे घृणा क्या ईर्ष्या से इतनी सुदूर है
जो सोती यो घृणा परस्पर मिल कर ऐसे
और शत्रुता का कोई भय शेप नही है।

लाइसैन्डर हे श्रीमत्! कहूँ क्या मै हूँ स्वय चमत्कृत,
अर्द्धसुप्त हूँ या है अर्द्ध जाग्रतावस्था मेरी सच यह?
किन्तु शपथ है, म कह सकता नही कि कैसे
आ पहुँचा मै यहाँ न जाने!
अरे सत्य ही कहता हूँ मै जितना पाता
सोच विगत की,
शायद यह सब यो है हुआ कि मै था

आया यहाँ हर्मिया के सग।
और हमारा यह विचार था करे पलायन
हम एथेन्स से
दूर, दूर इतने कि यहाँ के नियम नही
लागू हो हम पर।
हम इन बाधाओ से बच कर भाग जा सकें।

एजियस . बहुत हुआ प्रभु! बहुत हुआ अब,
न्याय, नियम इस पर प्रभु! अपना अब बरसाये,
दण्ड चाहिये दण्ड क्योकि अपराध हुआ है!
कर जाते ये दूर पलायन, औ' डेमेट्रियस!
इस प्रकार मुझको तुमको यह खूब हराते,
तुम्हे न मिलती पत्नि और मुझको मेरी अभिलाषा
निश्चय,
मै चाहता यही कि वह हो पत्नि तुम्हारी!

डेमेट्रियस . हे श्रीमत! सुदरी हेलेना ने मुझको
बतलायी थी इनके इस विचार की बातें।
इनके वन मे आने की सुन हुआ क्रुद्ध मै
पीछे भागा इनके, और सुदरी हेलेन आई पीछे।
पर श्रीमान्! जानता कुछ भी नही किंतु मै
क्या थी ऐसी शक्ति, शक्ति वह क्या थी ऐसी—
जिससे प्रेम हर्मिया के प्रति जो था मेरा
गया बर्फ सा पिघल और लगता है अब तो
बचपन का सा खेल एक कभी जो बहलाता था।
मेरे मन के सारे सद्गुण, श्रद्धा सारी,
मेरे दृग का हर्ष और मजिल भी अन्तिम

बनी यही हेलेना ! हे प्रभु ! इससे ही तो
देखी थी हर्मिया नही, तब निश्चितार्थ था
हुआ, किंतु ज्यो
ज्वर मे भोजन भी अप्रिय लगने लगता है,
किंतु स्वस्थ होने पर स्वाभाविकता से जो
फिर अच्छा लगने लगता है,
मुझे प्यार हेलेन का, केवल वही चाहिये
और उसी के प्रति मेरा यह प्यार अमर हो !

थीसियस सुघर प्रेमियो ! मिले भाग्य से ही तुम
सुख से,
अब छोडो यह विषय न इस पर और बात हो !
और एजियस ! अभिलाषा वह
सकल तुम्हारी पूर्ण करूँगा मै, मदिर मे
इन दोनो युगलो को भी अनतबधन मे
बाँधूंगा, जब स्वय स्नेहबधन मे मै भी
बँध जाऊँगा ।
अरे प्रात तो बीत चला, अपना शिकार भी
नही जमेगा, टालो उसको,
चलो चले एथेन्स ! तीन हम और तीन ये
दावत होगी बडे ठाठ की, सुख बरसेगा ।
हिप्पोलिटा ! चलो हे प्रेयसि !

[थीसियस, हिप्पोलिटा और सेवको का प्रस्थान]

डेमेट्रियस : यह सब बाते दिखती है लघु, धुँधली-धुँधली
जैसे वे सुदूर के पर्वत मेघ बन गये !

हर्मिया विस्फारित नयनो से मै क्या देख रही हूँ

सब कुछ दो दो सा दिखता है।

हेलेना यही मुझे भी तो लगता है।
डेमेट्रियस रत्न सा मुझको प्राप्त हुआ है,
मेरा है वह, मेरा ही है।

डेमेट्रियस क्या सचमुच हम जाग रहे हैं ?
लगता है हम अभी सुप्त हैं, स्वप्न देखते।
क्या न ड्यूक आये थे सचमुच अभी यहाँ पर,
क्या न उन्होने हमे बुलाया अपने पीछे !

हर्मिया : और पिता भी तो थे मेरे !

हेलेना और सग थी हिप्पोलिटा ! साथ थी उनके !

लाइसैन्डर वे सब मदिर में है हमको बुला गये न ?

डेमेट्रियस तब तो हम सब जाग रहे है। चलो चले अब।
अपने सुपने हम दुहराये।

[प्रस्थान]

बौटम (जाग कर) जब मेरे बोलने का मौका आयेगा, मुझे पुकारना। मै उत्तर दूंगा। मुझे आगे बोलना है--'अति सुन्दर पाइरैमस !' अरे हाय ! हइओ हो ! पीटर क्विन्स ! फ्लूट, धौंकनी बनाने वाले ! स्नाउट, ठठेरे ! स्टारवेलिंग ! हे भगवान ! सब छिप गये ? और मुझे सोता छोड गये ! मुझे भी क्या अजीब सुपना-सा हुआ ! किसी आदमी की अक्ल मे तो ऐसा सुपना क्या आयेगा ? आदमी एक गधा ही तो है, अगर अब वह अपने सुपने को बताता-पूछता फिरे ! मुझे लगता है मै था एक इसान तो कोई क्या बता सकता है--मुझे लगता है, मुझे लगता है मेरे पर आदमी बेवकूफ ही तो है, वह अगर कहे कि वह बता देगा कि मै क्या हो गया था ! आदमी की आँखो ने नहीं सुना होगा, न कानो ने

देखा होगा, न हाथो ने चखा होगा, न जीभ ने सोचा होगा, न दिल ने कहा होगा—ऐसा था मेरा सुपना! कोई क्या बतायेगा! मै इस सुपने पर पीटर क्विन्स से एक लबी गाने लायक कविता लिखवाऊँगा। उसका नाम होगा बौटम का सुपना, क्योकि उसका कोई तला[1] न होगा, और उसे मै नाटक के अतिम भाग मे गाऊँगा, ड्यूक के सामने। अरे उसे खूब जोरदार बनाने के लिये उस स्त्री[2] की मौत पर गाऊँगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[एथेन्स, क्विन्स का घर]

[क्विन्स, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स क्या तुमने बौटम के घर किसी को भेजा? क्या वह घर लौट आया?

स्टारवेलिंग उसकी तो कोई खबर ही नही। बेशक उसे तो वे लोग ले गये।

फ्लूट अगर वह नही आ सकता तो नाटक भी मारा गया। उसके बिना क्या वह आगे चल सकता है?

क्विन्स मुमकिन नही! सारे एथेन्स मे उस जैसा आदमी नही मिलेगा जो पाइरैमस का पार्ट अदा कर सके।

फ्लूट नही जी! यह तो है। कोई एथेन्स मे तो उस जैसा अक्लमद दस्तकार नही मिलेगा।

---

१ तला—अगरेजी में शब्द है बौटम। शेक्सपियर ने यहां शब्दो का मेल किया है।

२ स्त्री यानी नाटक की नायिका थिस्बी।

स्विन्स लाजवाव आदमी था। आवाज की मिठास मे तो समझो जैसे कोई नारी हो!

फ्लूट नारी नही, कहिये भारी! भगवान न करे, नारी वह कहाँ!

[स्नग का प्रवेश]

स्नग कलाकारो! ड्यूक मन्दिर से आ रहे है और उनके साथ दो या तीन और श्रीमत है जिनका भी अपनी स्त्रियो से विवाह हुआ है। अगर हमारा खेल जम जाता तो किस्मत वन जाती।

फ्लूट हाय प्यारे झगडालू वौटम! जिन्दगी मे छ आने[1] रोज खो डाले तुमने! क्या तुम ऐसा कर सकते थे? अगर ड्यूक उसे इतना न देते, पाइरैमस का पार्ट करने पर तो जनाव मै नाक कटा देता, फाँसी पर झूल जाता, पर उसके लिये क्या वह योग्य नही था। पाइरैमस को छ आने। कुछ भी नही थे।

[वौटम का प्रवेश]

वौटम कहाँ गये मेरे दोस्त! कहाँ है मेरे दिलोजिगर!

क्विन्स वौटम! सुन ली भगवान ने! कैसा दिन है। भाग खुल गये!

वौटम कलाकारो! मै आपको अजीव वाते वताऊँगा, पर मुझसे पूछना नही कि क्या है? क्योकि अगर मै वह भी वता दूं तो असल का एथेन्मवासी नही हो सकता। जैसे जो जो हुआ, वह मै आपको सव वता दूंगा।

क्विन्स प्यारे वौटम! सुनाओ! सुनाओ!

वौटम एक लफ्ज भी मेरे वारे मे इस वक्त नही! मै सिर्फ यह वताऊँगा कि सुन लो! सुन लो! ड्यूक ने खाना खा लिया है। कपडे पहन लो, दाढियाँ सूत लो, जूतो मे नये फीते डाल लो, और फौरन महल पहुँचो। किस्सा कोताह यह है कि नाटक

---

१ पेन्स।

हमारा होगा, उसकी माँग की गई है। हर हालत में थिस्बी के कपडे साफ धुले होने चाहिये। जो शेर कर पार्ट कर रहा है वह अपने नाखून न काटे, क्योकि वह ही शेर के पजो की जगह काम दे जायेगे। प्यारे कलाकारो ! अभिनेताओ ! कोई भी प्याज-लहसुन न खा लेना, क्योकि हमारे मुख से वदबू नही आनी चाहिये वहाँ। मुझे यकीन है कि लोग कहेगे आखिर मे—कैसा सुदर सुखांत नाटक है ! एक लफ्ज नही ! चलो ! फौरन ! चलो ! !

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[एथेन्स—थीसियस का प्रासाद]

[थीसियस, फाइलोस्ट्रेट, हिप्पोलिटा, लार्डगण और सेवकों का प्रवेश]

हिप्पोलिटा प्राण थीसियस! यह प्रेमीगण जो कहते है,
वह सब कितना अद्भुत है सच!

थीसियस अरे सत्य से कही अधिक आश्चर्य्यजनक है!
इन प्राचीन कथाओ, इन परियो की बातो
मे मुझको विश्वास नही होता है बिल्कुल।
प्रेमीजन औ' पागल, इनके तो दिमाग है
उत्तेजित रहते ऐसे ही।
उन्हे अजीब-अजीब शक्ल दिखती रहती है!
शात विवेक न जिसको पाता सोच वही कहते है वे तो!
पागल, प्रेमी, कवि—तीनो की
होती है कल्पना तीव्र ही!
नही नरक मे जितने वे शैतान, दीखते किसी एक को,
वह पागल है।
प्रेमी उच्छृखल, हेलेन सी रूपसि की छवि
किसी कँजरिया के चेहरे में ही पा लेता!
कवि की आंखें,
विस्फारित हो किसी मधुर उन्मादाप्लावित,
व्योम धरा को है निहारती, और अवनि से

फिर अवर तक,
और कल्पना जैसे अनजाने रूपो को देती है आकार
आप ही
कवि-लेखनी उन्हे कर देती सगुण, शून्य को छवि देती है,
नामधेय रचती है उसको सत्य बनाकर !
सुख की यदि आशका है तो
वह अवश्य करता है प्रस्तुत ।
किंतु निशा मे, कर कल्पना किसी भय की वह
सहज किसी झाडी को भालू कह सकता है ।

हिप्पोलिटा किंतु रात की कथा समस्त कह रहे जो ये
उसमे क्या इन सबके ही मस्तिष्क एक से
हुए, कि सब की हुई कल्पना एक सदृश ही ?
और कथा मे तारतम्य भी तो पूरा है,
कुछ भी हो आश्चर्यजनक है, स्तुत्य मन्य ही !

थीसियस लो प्रेमीजन आये, कैसे है प्रसन्न वे !

[लाइसैन्डर, डेमेट्रियस, हर्मिया और हेलेना का प्रवेश]

मित्रो ! हो आनदित तुम सब ! और प्रेम के
नये-नये दिन रजन करे तुम्हारे मन का ।

लाइसैन्डर हमसे अधिक आपको सुख हो स्वामी, गौरव
बढे आपका !

थीसियस आओ ! होगा मास्क नृत्य क्या हम देखे अब ?
अरे तीन घटे का लम्बा समय सामने पड़ा हुआ है,
भोजन करके सोने तक के बीच समय मे !
कहाँ हमारे आनदोत्सव का है वो तो नियत प्रबधक !
क्या आनन्द यहाँ प्रस्तुत है ?

क्या है नाटक नही एक भी जो कि हमारे
इन लम्बे घटो को सुख से ही सरका दे ?
फाइलोस्ट्रैट कहाँ है उसको यहाँ बुलाओ !

फाइलोस्ट्रैट — प्रस्तुत हूँ, थीसियस शक्तिशाली महान हे !

थीसियस — आज साध्य वेला के हित क्या रजन है अब ?
मास्क है कि सगीत ! किस तरह काल बिताये
यदि कोई है नही मनोरजन कैसे हो ?

फाइलोस्ट्रैट — यह सक्षिप्त एक सूची है
जिसमे रजन के साधन हैं वर्णित हे प्रभु !
जो चाहे श्रीमान् बतायें, वही प्रथम देखेंगे हम सब !

[कागज़ देता है।]

थीसियस — (पढता है।) सैन्टॉरो[1] का युद्ध ! इसे गायेगा अपने
तारो के बाजे पर एक नपुसक आ कर
है कोई एथेन्स निवासी।
नही यह नही, मै कह चुका उसे पहले ही प्रेयसि से हूँ,
अपने स्वजन हरक्युलिस की गौरव गाथा में !
(पढता है।) नशे ! नशे में डूबे बैकेनल[2] का
दगा जिसमे क्रोधित हो कर
थ्रेस निवासी गायक गण का वध करते हैं वे पागल से,
बहुत पुरानी चीज़ हो गई ! पहली बार विजेता बन कर
मै थीबीज नगर मे आया, तब भी यही हुआ था
अभिनय !
(पढता है।) ज्ञान, ज्ञान के स्वर्गवास पर

---

१ ग्रीस में अर्द्ध मनुष्य अर्द्ध पशु माने जाते थे। गाते थे।
२ काम वासना-प्रधान उन्मत्त उपदेवतागण।

कला-देवियो का वह रोदन !
ज्ञान बुभुक्षित हो मरता है !
यह कोई है तीव्र व्यग, आलोचन होगा,
इस विवाह के उत्सव मे तो नही जँचेगा।
(पढता है।) पाइरैमस थिस्बी की प्रेम कथा, यह क्या है?
दुखमय है क्या या सुखात ! सुख भी औ' दुख भी ?
ऊबाने वाली सक्षिप्त भला यह क्या दोनो ही ?
वाह ! वाह ! यह गर्म बर्फ है, अद्भुत औ'
आश्चर्य्यजनक कैसा है हिम जो !
अजब सुरीले और बेसुरे का मिलान है ?

फाइलोस्ट्रैट दस शब्दो का नाटक है प्रभु !
इतना छोटा नाटक मैने कभी न देखा !
किंतु वही दस शब्द बहुत लबे लगते है,
मुश्किल हो जाता है उसको देख झेलना,
सारे नाटक मे न एक भी शब्द कही
उपयुक्त मिलेगा, नही एक भी
अभिनेता है ठीक, अत है सुखद क्योकि
पाइरैमस करता आत्मघात है !
देख चुका हूँ, प्रभु ! इसका, मै स्वय रिहर्सल,
और कहूँगा, मेरी आँखे हुई पनीली,
किंतु न बरसा पायेंगी आँखे फिर ऐसे
अश्रु हास के, जैसी उसे देख कर आती हँसी जोर की।

थीसियस : अरे कौन है जो उसका अभिनय करते है ?

फाइलोस्ट्रैट है मजूर, एथेन्स नगर के मेहनतकश वे,
दस्तकार है,

कभी बुद्धि का श्रम न उठाया लगता उनने ?
अब जी तोड लगन से जुटकर यह नाटक तैयार किया है
प्रभु ! विवाह के लिये आपके,
रंजन करने ।

थीसियस तब हम उसे अवश्य, बुलाकर के, देखेंगे ।

फाइलोस्ट्रेट नही, वीर प्रभु ! वह आपके योग्य तो सचमुच
कभी नही है । स्वय सुन चुका हूँ सारे को !
वह तो कुछ भी नही, नही है कुछ भी, कह दूं !
हाँ उनके यदि आप इरादे देखे, उनकी नीयत देखें
उसमें शायद हो तफरीह आपकी थोडी !
बडी बडी मेहनत से रट कर याद किया है नाटक उनने,
केवल करें प्रसन्न आपको, जी बहलायें,
यही हृदय मे भाव रहा है ।

थीसियस मै अवश्य देखूंगा उनका नाटक, क्योकि कभी भी
अनुचित होता कुछ न वहाँ पर
जहाँ सादगी औ' श्रद्धा है तत्पर रहते ।
जाओ, उनको यहाँ बुलाओ,
आसन ग्रहण तुम करो अपना अहे देवियो !

[फाइलोस्ट्रेट का प्रस्थान]

हिप्पोलिटा : नही, चाहती मै कि दीनता अधिक भार ले,
और तुम्हारी सेवा मे कर्तव्य नष्ट हो ।

थीसियस आह नही होगा कुछ ऐसा मेरी प्रेयसि !

हिप्पोलिटा वह कहते है वे तो कुछ भी नही जानते ।

थीसियस . हम वह 'कुछ भी नही' देख कर
भी उनको देगे अपना तो धन्यवाद ही,

क्या न दया इतनी हम उन पर कर सकते है ?
उनकी भूलो को नगण्य मानेगे हम तो
यही हमारी क्रीडा की सौम्यता बनेगी ।
नही जिसे कर सकता है कर्त्तव्य दीन मन,
गौरव का सम्मान शक्ति मे उसे परखता
गुण की चिता त्याग, प्रेयसी !
मै आया हूँ यहाँ, अनेको विद्वानो ने
मेरा स्वागत किया योजनाएँ रट-रटकर,
पर जब समुख आते मेरे कांप गये वे पड कर पीले,
अटक-अटक कर बोल सके वे हकलाये से,
भय ने उनकी वाणी की वह सहज तीव्र गति उनसे छीनी,
और अत मे मूक बने वे चले गये, स्वागत भाषण भी
बोल न पाये,
प्रेयसि ! सुनो ! बात का मेरी तुम विश्वास करो,
मैने तो
उस विमौन मे भी अपने स्वागत का अनुभव
किया क्योकि वह भय था क्या ? कर्त्तव्य परायण
सकोचो का एक प्रदर्शन,
उक्ति-चमत्कारो मे गर्भित सभाषण का
रस मैने पाया उन नम्र अबोलेपन मे,
प्रिये ! प्रेम औ' वह सादगी अवाक् मुझे तो
लगता है उँडेलते अपने भावो को मन की
गहराई मे, सब कुछ ही
कर देते है प्रगट, नही रहती कुछ बाधा ।

[फाइलोस्ट्रेट का पुन प्रवेश]

फाइलोस्ट्रेट स्वामी हो प्रसन्न ! आता है सूत्रधार अब
और सुनायेगा अपना वक्तव्य प्रथम वह ।

थीसियस आने दो, उसको आने दो !

[तूर्य्य निनाद]

[प्रथम वक्तव्य के रूप में क्विन्स का प्रवेश]

[प्रथम वक्तव्य]

अप्रसन्न करते है यदि हम,
तो वह नेकनीयती से ही,
यही सोचिये, क्योकि नही हम
अप्रसन्न करने आये है !
नेकनीयती लाई हमको, और यहाँ पर
अपना सादा कौशल सारा
दिखलाते है, और अत का
अपने यही सत्य-उपक्रम है ।
अत सोचिये, हम विरोध पाते है केवल,
हम न यहाँ आये है सचमुच
मोच, आपको हम कर सकते
है प्रमन्न सतुप्ट हृदय से,
किंतु हमारी नीयत यह है,
सव कुछ मे प्रसन्न हो श्रीमन् !
यह अपना तो भाव नही है ।
पछताएँ श्रीमान् हृदय मे ।
अभिनेता प्रस्तुत है सारे ।
और देख कर उनका अभिनय

जान सकेंगे आप स्वय ही,
जो कुछ भी जानने योग्य है।

थीसियस यह आदमी एक बात पर भी नही जमता।

लाइसैन्डर उसने तो वक्तव्य को उजड्ड घोडे-सा दौडा दिया। रुकना उसे आता ही नही। श्रीमान्! यह भी नीति की बात है। बोलना काफी नही, सच बोलना चाहिये।

हिप्पोलिटा वक्तव्य ऐसे बोला जैसा बच्चा रटकर सुना गया, आवाज तो आई, पर समझ मे कुछ न आया।

थीसियस भाषण था कि झनझनाती जजीर! टूटी नही, पर कही एक-सी नही। अब आगे कौन है?

[**पाइरेमस, थिस्बी, दीवाल, चांदनी और शेर का प्रवेश**]

[वक्तव्य]

हे श्रीमान्! बहुत सभव है
अचरज करे देख यह नाटक,
पर आश्चर्य्य और भी करिये
जब तक सत्य नही सुलझा दे
सब रहस्य को, वह मनुष्य है
पाइरेमस, जानते आप है,
यह सुदर स्त्री निश्चय थिस्बी है,
यह मनुष्य जिस पर दिखता है
लगा हुआ चूना औ' ककड
है दीवाल एक, यह ही है
वह दीवाल नीच जो इन दो
सुघर प्रेमियो के मिलने मे
खडी बीच मे बाधा बन कर।

इस दीवाल बीच है छोटा
एक छेद भी, वे बेचारे
इसमे से बातें करके ही
अपने जी को बहलाते है।
कोई भी इस पर ऐसा आश्चर्य न करिये !
यह मनुष्य यह लालटेन ले खडा हुआ जो
काँटो की झाडी गह, देखे इस कुत्ते के पास कौन है ?
है चाँदनी, अरे देखें तो, स्वय चाँदनी !
पास निनस की समाधि के ये दोनो प्रेमी
वहाँ चाँदनी मे मिलते थे विना हिचक के,
और प्रेम करते थे मिल कर।
यह विशाल पशु, नाम सिंह है जिसका, इसको
देख, रात्रि मे आती थी थिस्बी जब मन में
भर विश्वास, डर गई, भागी सहसा उल्टे
पाँव, किन्तु चोगा उसका गिर गया भूमि पर,
इसी नीच औ' हिंस्र सिंह ने
अपने मुख से, रे रुधिरार्द्र होठ धर अपने
उस चोगे पर रक्त लगाया।
आया पाइरैमस वह सुदर दीर्घकाय
अति स्वस्थ तरुण जब
देखा उसने उसकी प्यारी थिस्बी का
चोगा धरती पर पडा हुआ था लोहू भीगा,
खींच भयानक रक्त पिपासु खड्ग झट उसने
अपना निर्मम,
परम वीरता से अपने खौलते वक्ष में

वही घुसाया,
थिस्बी वही पास मे झुरमुट मे तरुओ के
जो करती थी खडी प्रतीक्षा,
आई, देखा, आह! खीच प्रिय की कटार ली
उसने अपनी छाती मे ली भोक वेग से
और! मर गई।
अब दीवाल, चाँदनी औ' ये सिंह आदि औ' दोनो प्रेमी
खेल दिखाये।

[प्रथम वक्तव्य, पाइरेमस, थिस्बी, शेर और चांदनी का प्रवेश]

थीसियस अरे! क्या कही यह शेर तो नही बोलेगा कुछ?

डेमेट्रियस · क्या आश्चर्य्य है श्रीमान्! जहाँ कई गधे बोलते है, वहाँ एक सिंह क्यो नही बोल सकता?

दीवार
इस नाटक में ही यह भी आता है ऐसे,
मै, जिसका है नाम स्नाउट, दीवाल बना हूँ,
वह दीवाल, देखिये सुनिये, जिसके तन म
एक छेद है या दरार है, जिसके द्वारा
प्रेमी पाइरेमस औ' थिस्बी बहुधा आ कर
बहुत गुप्त ढग से कानाफूसी करते है।
यह चूना, कक्कड, पत्थर बतलाते है सब
कि हूँ वही दीवाल देखिये! सच है मै ही।
यह दरार है, जालिम कैसी, इसमे से ही
डरे हुए प्रेमी वे दोनो बात करेगे।

थीसियस आप क्या चाहते है कि चूना और कक्कड और अच्छा बोले?

डेमेट्रियस इतनी अक्लमद सूक्ष्म-सूक्ष्म मे किया विभाजन तो मैने कहीं

सुना ही नही था श्रीमान् ।

थीसियस पाइरैमस दीवाल के पास आ रहा है। सुनिये, सुनिये ।

[पाइरैमस का पुन: प्रवेश]

पाइरैमस : अरो रात ! ओ रात भयकर ! ओ री काले रग
की काली स्याह रात री !
अरी रात ! तू जो रहती है सदा नही जब
दिन रहता है।
अरी रात ! ओ रात ! हाय री हाय हाय री !
मुझको डर है कही वचन वह
भुला गई थिस्बी क्या अपना !
ओ दीवाल ! अरी ओ प्यारी ! ओ प्यारी दीवाल,
मनोहर !
तू मेरे औ' उसके पूज्य पिता की धरती
के जो बीच खडी है करती हुई विभाजन !
ओ दीवाल ! भीत ओ ! प्यारी ! ओ मनहर तू !
दिखा मुझे अपनी दरार जिसमे से मै अब
चमका सकूँ आँख यह अपनी, झाँक सकूँ कुछ !
[दीवाल उँगलियाँ उठाती है।]
धन्यवाद ! ओ करुणामय दीवाल! भरी सौजन्यो से तू,
प्रेम देवता इसके लिये करेगा तेरी रक्षा अच्छी।
है क्या देख रहा हूँ मै अब ? थिस्बी आई नही
यहाँ पर ?
ओ दीवाल कमीनी ! तुझमे से मै कुछ भी
देख नही पाता अच्छाई,
तेरे पत्थर हो अभिशप्त कि मुझको धोखा देती !

ओ दीवाल ! अधमतम है तू !

थीसियस मेरी राय मे, अगर दीवाल मे अक्ल होगी तो जवाब मे जरूर गाली देगी !

पाइरैमस नही श्रीमान् ! ऐसा कैसे हो सकता है ! दीवाल क्यो बोलेगी यहाँ ? 'अधमतम है तू', के बाद तो थिस्बी को बोलना है। लीजिये वह आ गई। अब मै उसे दीवाल के छेद मे से देखूंगा। आप देखियेगा। मैने कहा न यहाँ तो बिल्कुल वही होगा जो ठीक है। लीजिये वह आ पहुँची !

[थिस्बी का पुन प्रवेश]

थिस्बी ओ दीवाल ! न जाने तैने यो ही रह कर
मेरी कितनी दीन कराह सुनी है निश्छल,
क्योकि प्राण पाइरैमस का मुझमे होता है
वह वियोग जो, विरह रुलाता !
मेरे अधर गुलाबी जाने कितनी-कितनी
बार चूम है चुके कठिन तेरे ये पत्थर !
चूने मे ये जडे हुए से तेरे पत्थर !

पाइरैमस देख रहा हूँ मै आवाज एक, तो अब मैं
चलूँ छेद के पास भीत के,
एरे सुनूँ चलूँ प्यारी थिस्बी के मुख को,
थिस्बी मेरी !

थिस्बी तुम मेरे प्रियतम हो, मेरे प्राण, ठीक क्या रही
सोच मै !

पाइरैमस तुम कुछ भी सोचो जो चाहो,
मै हूँ वही तुम्हारा प्रेमी,
लाइसैन्डर सा अब भी हूँ विश्वासपात्र मै।

थिस्वी मै हेलेन की भाँति रहूँगी मृत्यु, मृत्यु तक !
पाइरैमस नही शैफैलुस[1] प्रोक्रुस के प्रति
था सच्चा यो,
थिस्वी मै प्रोक्रुस, तुम शैफैलुस के
प्रति हूँ प्रिय ज्यो !
पाइरैमस प्रिये ! भीत की इस दरार से मुझको चूमो !
अधम भीत है !
थिस्वी · प्राण ! भीत की इस दरार को चूम रही हूँ,
नही तनिक भी होठ तुम्हारे !
पाइरैमस कहो कि निन्नी की समाधि पर मुझे मिलोगी ?
थिस्वी : जीवन मृत्यु शपथ से कहती, विना देर के !
[पाइरैमस और थिस्वी का प्रस्थान]
दीवाल . मै दीवाल कर चुकी अपना पार्ट पूर्ण अव,
यो कर चुक कर अव जाती हूँ अपने रस्ते ।
[प्रस्थान]

थीसियस अव पडोसियो के वीच की दीवाल तो गायब हो गई ।

डेमेट्रियस अव क्या चारा है श्रीमान् ! जव दीवालें भी विना सावधान किये ही सुनने को इतने स्वेच्छाचार से काम करे ।

हिप्पोलिटा शायद मैने इससे अधिक मूर्खता नही देखी ।

थीसियस नाटक तो अच्छे से अच्छा भी छाया होता है, और वुरे से वुरा भी क्या वुरा है, अगर अपनी कल्पना उसके अभावो को पूरा कर ले !

हिप्पोलिटा तव तो शायद यह उन लोगो की नही, आपकी कल्पना

---

१ सिफैलस का विगडा रूप । यह एक प्रेमी या जो पत्नी के प्रति ईमानदार रहा । अरोरा देवी भी इसे विचलित न कर सकी ।

होगी ?

थीसियस : अगर हम उनके बारे मे वही सोचे जो वे अपने बारे मे खुद सोचते है, तो यह सब लाजवाब आदमी निकलेगे ! लीजिये दो जोरदार जतु आगये, एक सिह है, एक मनुष्य ।

[सिह और चांदनी का पुन प्रवेश]

सिह अहे देवियो ! आप, हृदय है जिनके कोमल
मोटे चूहे को निहार कर कभी फर्श पर चलते जिनको
डर लगता है। हो सकता है, कॉप उठे औ' सिहर
उठे अब।
जब गरजेगा सिह क्रुद्ध हो बडी जोर से ।
जान लीजिये कि मै, सिर्फ हूँ स्नग नामक
लुहार ही, छोटा सा हूँ शेर, नही सिहनी का जाया,
यदि सगर मे आऊँ यहाँ सिह सा भीषण,
इससे बढ कर करुण और क्या होगा इस मेरे
जीवन मे !

थीसियस कितना विनम्र जतु है ! और हृदय कितना पवित्र है ।

डेमेट्रियस जतुओ मे एकमात्र जतु ! श्रीमान्, आज तक नही देखा !

लाइसैन्डर वीरता मे तो यह सिह बिल्कुल लोमडी है ।

थीसियस बिल्कुल ! और विवेक मे तो बतख समझिये !

डेमेट्रियस नही श्रीमान्! इसकी वीरता विवेक को नही ले जा सकती । और लोमडी बतख को उठा ले जाती है ।

थीसियस इसका विवेक, मुझे निश्चय है इसकी वीरता को नही उठा सकता, क्योकि बतख लोमडी को नही उठा सकती । छोडिये, इसे इसके ही विवेक पर डालिये ! अब जरा चॉद की बात सुनिये ।

चांदनी लालटेन यह नोकदार चदा की प्रतिनिधि—

होगी ?

थीसियस : अगर हम उनके बारे मे वही सोचे जो वे अपने बारे मे खुद सोचते है, तो यह सब लाजवाब आदमी निकलेगे ! लीजिये दो ज़ोरदार जतु आगये, एक सिह है, एक मनुष्य ।

[**सिह और चांदनी का पुन प्रवेश**]

सिह अहे देवियो ! आप, हृदय है जिनके कोमल
मोटे चूहे को निहार कर कभी फर्श पर चलते जिनको
डर लगता है । हो सकता है, कॉप उठे औ' सिहर
उठे अब ।
जब गरजेगा सिह क्रुद्ध हो बडी ज़ोर से ।
जान लीजिये कि मै, सिर्फ हूँ स्नग नामक
लुहार ही, छोटा सा हूँ शेर, नही सिहनी का जाया,
यदि सगर मे आऊँ यहाँ सिह सा भीषण,
इससे बढ कर करुण और क्या होगा इस मेरे
जीवन मे !

थीसियस कितना विनम्र जतु है ! और हृदय कितना पवित्र हे ।

डेमेट्रियस जतुओ मे एकमात्र जन्तु ! श्रीमान्, आज तक नही देखा !

लाइसैन्डर वीरता मे तो यह सिह बिल्कुल लोमडी है ।

थीसियस बिल्कुल ! और विवेक मे तो बतख समझिये !

डेमेट्रियस नही श्रीमान्! इसकी वीरता विवेक को नही ले जा सकती । और लोमडी बतख को उठा ले जाती हे ।

थीसियस इसका विवेक, मुझे निश्चय है इसकी वीरता को नही उठा सकता, क्योकि बतख लोमडी को नही उठा सकती । छोडिये, इसे इसके ही विवेक पर डालिये ! अब जरा चाँद की बात सुनिये ।

चांदनी लालटेन यह नोकदार चदा की प्रतिनिधि—

डेमेट्रियस इसको सिर पर सींग पहन कर आना चाहिये था।

थीसियस वह नया चाँद नहीं, उसके सींग भीतर घुस गये हैं उसकी गोलाई में।

चाँदनी लालटेन यह नोकदार चंदा की प्रतिनिधि
और चाँद के भीतर का मैं मनुज स्वयं हूँ।

थीसियस यह तो सबसे बडी गलती हो गई। इस आदमी को तो इस लालटेन के भीतर रखना चाहिये। वर्ना फिर यह चाँद के भीतर कहाँ है ?

डेमेट्रियस श्रीमान्! वहाँ जाने की तो वह हिम्मत भी करेगा! मोमबत्ती जल रही है वहाँ। वैसे है तो यह मामला बुझता हुआ ही।

हिप्पोलिटा मैं इस चाँद से ऊब गई हूँ। काश यह बदल जाता! कुछ करे तो!

थीसियस ऐसा लगता है, यह जो इसमें विवेक या स्वेच्छा की ज्योति इतनी कम है, यह ढल रहा है। लेकिन फिर भी, दाक्षिण्य के कारण, हमें रुकना ही चाहिये।

लाइसैन्डर हाँ चाँद! आगे बोलो!

चाँदनी मुझे आपसे जो कहना है, वह सिर्फ यही है कि लालटेन चाँद है, और मैं इस चाँद के भीतर का आदमी हूँ, यह झाडी कँटीली है, यह मेरी झाडी है, और यह कुत्ता मेरा कुत्ता है।

डेमेट्रियस लेकिन यह सब तो लालटेन के भीतर रहने चाहिये। क्योंकि यह सब चाँद में है। लीजिये। खामोशी से सुनिये। आ रही है थिस्बी ?

[थिस्बी का पुन प्रवेश]

थिस्बी यही पुरानी निन्नी की समाधि है, मेरा
प्रिय न यहाँ क्या आया अब तक ?

सिंह (गरज कर) ओह

[थिस्बी भागती है।]

डेमेट्रियस खूब गरजा! शाबाश शेर!

हिप्पोलिटा खूब चमके चाँद! सचमुच? क्या नजाकत से चाँद चमक रहा है!

[शेर थिस्बी के चोगे को भिंभोड़ कर चला जाता है।]

थीसियस क्या चूहे की तरह फाड़ा है बिल्ली जैसे शेर ने!

डेमेट्रियस. फिर आ गया पाइरैमस!

लाइसैन्डर लिहाजा शेर हो गया गायब!

[पाइरैमस का पुन प्रवेश]

पाइरैमस मधुर चन्द्र! तेरी इन सूरज सी किरणो के
कारण तुझको
धन्यवाद देता हूँ प्यारे, क्योकि इस समय
चमक रहा तू खूब, क्योकि मै आशा करता
तेरी स्वर्णिम चमकदार दीपित किरणो की
स्निग्ध ज्योति मे, देख सकूँगा
थिस्बी के वास्तविक रूप को!
किंतु अरे दुर्भाग्य! ठहर जा!
आह चिन्ह! वह क्या है कह जा!
कैसा यह हतभाग अरे क्या?
देखो नयन! देखते हो क्या?
कैसे हो सकता है यह सब?
मेरी प्यारी! ओ स्वादिष्ट बतख! ओ प्यारी!
तेरा चोगा, प्यारा चोगा!
रँगा रक्त मे तेरा चोगा!

अरी क्रूर देवियो ! टूट कर
मेरे सिर पर गिरो रोर भर !
सर्वनाश कर दो तुम आओ !
शात-शात कर ध्वंस मचाओ !

थीसियस यह वेदना, यह प्रिया की मृत्यु, यह दुखद अत तो किसी भी मनुष्य को उदास दिखा सकती थी !

हिप्पोलिटा धिक् है मेरे हृदय को। मुझे इस पर दया आती है।

पाइरैमस अरी प्रकृति ! क्यों बता किया है तूने कह तो
सिहो का निर्माण भला इस वसुन्धरा पर ?
आह अधम है सिंह कि उसने मेरी प्रेयसि
थिस्बी को मारा है ऐसे
मेरी थिस्बी सकल लोक में सकल काल मे
सर्व श्रेष्ठ सुदरी, नही, हाँ, थी सचमुच ही,
वह रहती थी, और प्यार करती थी, थी वह
चाहा करती,
और प्रसन्न रहा करती थी।
आओ अश्रु नयन यह भर दो,
निकलो खड्ग, घाव अब कर दो,
पाइरैमस की छाती फाडो।
बाँई छाती मे घुस जाओ,
जहाँ धडकता दिल घुस जाओ

[खड्ग मार लेता है।]

अब मरता हूँ ऐसे ऐसे
अरे मर गया
अरे उड गया

मेरी आत्मा का चेतन तो नील गगन मे
ओ जिह्वा ' खोदे प्रकाश निज
चद्र ! भाग जा ! रस्ता ले निज

[चांदनी का प्रस्थान]

अब मरता हूँ, मरता हूँ मै मरता मरता
मरता मर मर

[मृत्यु]

डेमेट्रियस अभी नही मरा है। शर्त्त है इक्के की चोट ! अभी दम है !

लाइसैन्डर : इक्के से उतर कर बोलो ! वह तो मर गया । अब वह नही है ।

थीसियस नही, शायद चिकित्सक की सहायता से यह भी बच सकता है। और गधा प्रमाणित हो सकता है ।

हिप्पोलिटा यह क्या हुआ ? चाँदनी कैसे लौट गई ? अभी थिस्बी तो आई ही नही, अभी उसे उसका प्रियतम मिला ही कहाँ है ?

थीसियस वह उसे तारो की रोशनी मे ढूंढ लेगी । वह आ गई और उसके उद्वेग के साथ नाटक भी समाप्त हो जायेगा ।

[थिस्बी का पुन प्रवेश]

हिप्पोलिटा मुझे लगता है इसका भाषण ऐसे पाइरैमस के लिये ज्यादा लबा न होगा। यह तो जल्दी खत्म कर देगी !

डेमेट्रियस धूल का एक जर्रा तराजू के दोनो पलडे बराबर किये देता है। कौन पाइरैमस कि थिस्बी, कौन किससे कम है ? वह पुरुष है, भगवान बचाये, यह स्त्री है, भगवान रक्षा करे ?

लाइसैन्डर उसने अपनी सुदर आँखो से उसे देख भी लिया।

डेमेट्रियस मतलब यह कि अब वह बोलेगी—

थिस्बी प्रियतम सोने हो क्या सोतो ?

या मृत हो प्रिय ! कुछ तो डोलो !
जागो हे पाइरेमस जागो !
बोलो बोलो ! हुए मूक तुम ?
हाय मर गये ! बिल्कुल ही तुम ?
ओ समाधि मेरे प्रियतम की
प्यारी प्यारी आखे ढाँको !

हाय फूल से होठ तुम्हारे,
और नासिका ज्यो कलिका रे !
शुभ्र कुसुम सी वदन विभा ओ !
गये गये सब हाय खो गये,
आह प्रेमियो ! हृदय फट गये,
नयन तुम्हारे नयी प्याज की
हरी गाँठ से थे, मत जाओ !

अहे भाग्य की क्रूर देवियो
दुग्ध श्वेत कर लेकर आओ
शोणित में अब हाथ डुबाओ
क्योकि तुम्ही ने तो इसके रेशम का डोरा
हे फाडा ओ !
जिह्वा ! शब्द न बोल एक भी
ओ विश्वस्त, खड्ग अब जल्दी,
आ मेरी छाती मे तुम तो
जल्दी से घुस जाओ ।

[खड्ग मार लेती है ।]

विदा अलविदा मीत विदा लो,
यो थिस्बी मरती है देखो,

बिदा, बिदा दो, बिदा, बिदा ओ !

[मृत्यु]

थीसियस अब चाँदनी और शेर रह गये मुर्दों को गाडने को।

डेमेट्रियस जी हाँ। दीवाल भी तो है।

बौटम (उठ कर) नही। मै विश्वास दिलाता हूँ जिस दीवाल ने उनके पिताओ को अलग किया था वह गिर चुकी है। क्या आप अतिम वक्तव्य भी सुनना पसद करेगे या हमारी मडली के दो मनुष्यो का अब नृत्य देखना चाहेगे ?

थीसियस नही अतिम वक्तव्य तो रहने ही दो। तुम्हारे खेल मे किसी तरह की क्षमा माँगने की आवश्यकता ही नही है, क्षमा क्या होगी ? सारे पात्र तो मर गये, अब दोष किसे दिया जाये, सचमुच जिसने भी यह नाटक लिखा है, यदि वह पाइरैमस बनता और थिस्बी के जूते के फीते से फाँसी लगाकर मर जाता तो बडी जोर का दु खात नाटक बनता। और वैसे है यह जोर का ही। भई, खूब किया ! अब वह नृत्य शुरू करो ! वह अतिम वक्तव्य तो छोडो !

[नृत्य]

अर्द्धरात्रि के लौह जिह्व ने बजा दिये है बारह अबतो,
चलो प्रेमियो ! अब शैय्या पर,
अब परियो का समय होगया।
मुझको डर है कहीं भोर मे सोना पडे न धूप
चढे तक !
कितनी देर हो गई देखो रात जागते !
गोचर ही मे स्थूल रूप इस नाटक ने भी
कितनी भारी रात अरे यो ही ठग ली ये,

प्यारे मित्रो ! चलो चले अब हम सब सोने,
एक पक्ष तक नित्य यही आनद हर्ष उत्सव हो मनहर,
हम आनद मनायें तन्मय !

[सबका प्रस्थान]

[पक का प्रवेश]

पक
गरज रहा है भूखा सिंह,
वृक रोता है चद्र निहार,
सोता खर्राटे भर शात
दिन भर के सब करके काम
थका किसान छोड सब भार !
उठती है फिर चमक अबूझ
जली काठ से लपट अभूत,
उल्लू बोल रहा है गूंज
और दीन वह जो भयभीत
दुख मे रोता है अनबूझ
उसे शवो की स्मृति की भीति !
यही रात की वह है वेला
कब्रे जिसमे मुंह को खोल,
लेती है जमुहाई लबी
छायाएं जाती है डोल !
गिरजेघर के सूने पथ पर
चलती हैं छायाएँ और
हम परियाँ आत्याएँ जो है
रवि किरणो से अपनी ठौर
दूर बनाते अन्धकार के

स्वप्नो से चलते है झूम
इसी समय करते है क्रीडा,
यही समय है रिमझिम झूम !
चूहा तक न यहाँ पर आये
इस घर की न शाति को खोये
इसीलिये झाड़ू देने को
मै हूँ भेजा गया यहाँ पर !
कूडा करकट सभी सँवार
धर दूं पीछे यह है द्वार।

[ओबेरोन और टिटानिया का सेवको के साथ प्रवेश]

ओबेरोन इस घर मे झिलमिल कोई रोशनी जलाओ,
सुप्त अग्नि को थोडा सा ऊपर उकसाओ,
परी परी, आत्मा आत्मा अब सुख मे खेलो
झाडी पर के विहग बनो तुम चहको डोलो।
गाओ गाओ गीत मधुर तुम मीठे स्वर से,
नाचो नाचो अपने सारे आलस तज के।

टिटानिया पहले अपना गान सुनाओ हमको प्रियतम,
सीखे उसके मीठे चरणो को हम निरुपम,
फिर हाथो मे हाथ प्रेम से उलझायेगे
और नाचते हुए एक स्वर से गायेगे।

[नृत्य और गीत]

ओबेरोन अब प्रभात तक इस प्रकोष्ठ से
परी और आत्माएं सारी करे पलायन,
हम भी सुख शैया पर जाये और प्रेम मे
जा कर सोये,

हो अपनी सतान सदा सौभाग्य प्राप्त ही ।
ऐसे ही यह दपति तीना सदा सुखी हो
सच्चा प्रेम करे और पाये हर्ष सदा ही ।
नही प्रकृति-कर के कलक अब
वाधाएँ उनके जीवन मे वन पायें ।
उनके वच्चो के तन पर तिल, दाग, कि लहसुन,
ऐसे चिन्ह नही जो शुभ है माने जाते—
कभी न आये ।
नीहारो की मन्द मन्द झिलमिल मे परियो ।
इस प्रासाद भव्य के भिन्न प्रकोष्टो मे तुम
मधुर शाति से जा कर अब विश्राम करो चल ।
इसके स्वामी को आशिप दो । त्वर गति जाओ ।
भिनसारे जव भोर किरन नभ मे वल खाये,
मेरे पास लौट आ जाना ।
[ओबेरोन, टिटानिया तथा अन्यो का प्रस्थान]

पक — यदि हम छायाओ ने सचमुच किया आपको
अप्रसन्न है,
यही सोचिये, सब चलता है, और आप सो लिये
यही पर ।
यह रूपक था दीन अकिंचन,
नही कथानक भी था सुदर,
किंतु स्वप्न था, नही स्वप्न से अधिक कहूँ कुछ,
बुरा नही मानिये जरा भी, तव तो हम सुधार
कर लेगे,
मै पक हूँ ईमानदार हाँ ।

हो सकता है हमने किस्मत नही कमाई
पर अब साँपो की फुसफुस से[1]
बचने को मै बात बद कर जाता हूँ यो।
वर्ना फिर यक होगा झूँठा,
नमस्कार सबको हे भाई!
यदि हम मे हे मीत! मिताई,
तो रोबिन ने क्षमा उगाहो!

[प्रस्थान]

१ दर्श[illegible] सी-सी करके वक्ता को चुप कराना। [illegible] पर [illegible] के साप ने होते है।